केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो भारतीय बस्ती दैनिक वेब www.bhartiyabasti.com और उसका छपा संस्करण सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क-bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक
भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com
के लिये विज्ञापन बुक कराये।
विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम
सम्पर्क
मो0 9450567450
9336715406

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :45 अंक 294 शनिवार 18 मई 2024 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

बसपा का वोट सहेजने 18 को आएंगी मायावती

संवाददाता–बस्ती। बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री मायावती 18 जनवरी को शहर के राजकीय इंटर कॉलेज में बसपा प्रत्याशी के समर्थन में जनसभा को संबोधित करने बस्ती आ रही हैं। उनके कार्यक्रम को लेकर तैयारियां जीआईसी ग्राउंड में दो दिन पहले से ही शुरू हो चुकी थी। मायावती जनसभा के माध्यम से बसपा प्रत्याशी के लिए वोट सहेजती नजर आएंगी। उनकी पार्टी जिले में दस साल से सूखा झेल रही है। मौजूदा लोकसभा चुनाव में बसपा ने पहले पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष दयाशंकर मिश्र को प्रत्याशी बनाया था। नामांकन करने के बाद उनका टिकट काटकर पूर्व विधायक नन्दू चौधरी के बेटे लवकुश पटेल को उम्मीदवार बना दिया गया।

जिले में बसपा के राजनीतिक सफर की बात करें तो टॉप थ्री की रेस में बसपा 1989 में पहली बार आई। जब बसपा प्रत्याशी रामपदारथ तीसरे स्थान पर रहे थे। इसके बाद 1996, 1998 और 1999 में बसपा उम्मीदवार लालमनि दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे। 2004 के चुनाव में पहली बार बसपा ने जीत का स्वाद चखा और बसपा प्रत्याशी लालमनि प्रसाद को जीत मिली। 2009 में बसपा के टिकट पर लड़े अरविंद कुमार ने भी जीत दर्ज की। लगातार दो जीत के बाद इस सीट पर पिछले दो लोकसभा चुनावों से भाजपा का ही कब्जा है।

बस्ती–सोनूपार मार्ग के लिए 2.57 करोड़ आवंटित

संवाददाता–बस्ती। जिला अस्पताल चौराहे से कैली अस्पताल होते हुए सोनूपार रामपुर देवरिया मार्ग के शेष भाग के चौड़ीकरण व सुदृढीकरण के लिए शासन की ओर से 2.57 करोड़ का आवंटन किया गया है। लोक निर्माण विभाग के निर्माण खंड एक के तहत यह कार्य कराया जा रहा है। अवर अभियंता अभिषेक सिंह का कहना है कि बजट आवंटन के बाद जल्द ही शेष कार्य शुरू करा दिया जाएगा। जिला अस्पताल चौराहे से रामपुर देवरिया को जोड़ने वाले मार्ग पर मेडिकल कॉलेज व ओपेक अस्पताल कैली पड़ता है। इस मार्ग से होकर प्रतिदिन हजारों की संख्या में दो पहिया व चार पहिया वाहन गुजरते हैं। इसी मार्ग पर कई शिक्षण संस्थान व निजी अस्पताल हैं। यह मार्ग कई मुख्य गांव कस्बों को भी जोड़ता है। मार्ग के चौड़ीकरण कार्य के लिए 2354.75 लाख का बजट निर्धारित करते हुए अब तक कुल 325 लाख का आवंटन किया जा चुका है। इससे मार्ग चौड़ीकरण का कार्य कराया जा रहा है। बजट के अभाव में कार्य ठप था। आठ मई को शासन स्तर से 257.85 लाख रुपये का आवंटन कर दिया गया है।

एलआईसी व एसबीआई को नोटिस जारी

संवाददाता–बस्ती। जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग के अध्यक्ष अमरजीत वर्मा, सदस्य अजय प्रकाश सिंह की पीठ ने एलआईसी के शाखा प्रबंधक व एसबीआई कोर्ट एरिया के शाखा प्रबंधक को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। पीठ ने 20 मई को शपथ–पत्र के साथ आख्या प्रस्तुत करने को कहा है। न्यायालय ने पांच जनवरी 2024 को जगदीश प्रसाद शुक्ला बनाम भारतीय जीवन बीमा निगम बस्ती का परिवाद जगदीश के पक्ष में निर्णीत किया था। निर्णय के अनुपालन में बीमा कम्पनी की ओर से 5 लाख 4666 रुपये का चेक जारी किया गया। भुगतान के लिए चेक लगाए जाने पर वह बाउंस हो गया। भारतीय स्टेट बैंक के शाखा प्रबंधक ने चेक बाउंस के बारे में जो रिपोर्ट दी गई उस पर कोई हस्ताक्षर नहीं किया था। न्यायालय ने मामले को गंभीरता से लेते हुए दोनों के विरुद्ध कारण बताओ नोटिस जारी किया है। अदालत ने अपने आदेश में लिखा है कि क्यों न आपके विरुद्ध उपरोक्त प्रकरण में अवमानना का मुकदमा पंजीकृत कर लिया जाए। अगली सुनवाई की तारीख 20 मई तय की गई है।

पंजे और साईकिल के सपने टूट गये अब विदेश यात्रा की तैयारी– मोदी

लखनऊ (आभा)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को कांग्रेस सांसद राहुल गांधी और समाजवादी पार्टी (सपा) प्रमुख अखिलेश यादव पर निशाना साधते हुए कहा कि उन्हें बताया गया है कि लोकसभा चुनाव के बाद विदेश यात्रा के लिए उनके टिकट बुक हो गए हैं। प्रधानमंत्री ने फतेहपुर में एक रैली में कहा, ''पंजे और साइकिल के सपने टूट गए, खटाखट खटाखट, अब 4 जून के बाद की प्लानिंग हो रही है कि हार का ठीकरा किसपर फोड़ा जाए, खटाखट खटाखट, मुझे तो कोई बता रहा था कि विदेश यात्रा का टिकट भी बुक हो गया है, खटाखट खटाखट।''

पीएम मोदी ने अपना हमला जारी रखते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश में कांग्रेस का कोई अस्तित्व नहीं है। उन्होंने कहा, 'पूरी कांग्रेस एक परिवार के सम्मान की रक्षा में लगी हुई है। लेकिन फिर भी, दो लड़कों की साझेदारी हर चुनाव में शुरू हो जाती है क्योंकि सपा और कांग्रेस दोनों की अनुकूलता एक दूसरे से मेल खाती है क्योंकि दोनों परिवार के लिए समर्पित हैं, दोनों भ्रष्टाचार के लिए राजनीति में हैं। दोनों अपने वोट बैंक को खुश करने के लिए कुछ भी कर सकते हैं, दोनों अपराधियों और माफियाओं को बढ़ावा देते हैं, और सपा और कांग्रेस दोनों आतंकवादियों के प्रति समान रूप से सहानुभूति रखते हैं।''

रैली में पीएम मोदी ने आगे कहा, 'सपा का माफिया प्रेम अभी खत्म नहीं हुआ है, उनकी पार्टी के मुखिया माफिया की कब्र पर फतिया पढ़ रहे हैं। पाकिस्तान हमारे देश पर हमला करता था, कांग्रेस उन्हें क्लीन चिट देती थी और उन्होंने एक झूठी कहानी बुनी है 'भगवा आतंकवाद' की।'' प्रधानमंत्री ने कहा कि इस बार तो सपा–कांग्रेस ने चुनाव से पहले ही इरादे साफ कर दिए हैं। कांग्रेस कह रही है कि वो सबकी संपत्ति की जांच कराएगी। फिर वो आपकी संपत्ति में से एक हिस्सा, उनके लिए वोट जिहाद करने वाले वोटबैंक को दे देंगे।

पीएम मोदी ने कहा कि बाबा साहेब अंबेडकर ने धर्म के आधार पर आरक्षण का घोर विरोध किया था और संविधान सभा ने भी तय किया था कि हमारे देश में कभी भी धर्म के आधार पर आरक्षण नहीं होगा। लेकिन, जहां कांग्रेस सरकार है, वहां ये लोग दलितों और पिछड़ों का आरक्षण कम करके मुसलमानों को दे रहे हैं। अब ये लोग संविधान बदलकर एससी–एसटी–ओबीसी का पूरा आरक्षण मुस्लिमों को देना चाहते हैं। मैंने समाजवादी पार्टी से कहा था कि आप तो पिछड़ों की राजनीति करते हो, पिछले दरवाजे से पिछड़ों का आरक्षण लूटने का जो जाल बिछाया जा रहा है, जरा उसका विरोध तो कीजिए। लेकिन ये सपा वाले मुंह पर ऐसा ताला लगाकर बैठ गए कि वो बोलने को भी तैयार नहीं है।

इंडिया गठबंधन की रैली में बोलीं सोनिया गांधी –अपना बेटा आपको सौंप रही हूं, राहुल निराश नहीं करेंगे

रायबरेली (आभा)। कांग्रेस नेता सोनिया गांधी ने इंडिया गठबंधन की संयुक्त रैली को संबोधित करते हुए रायबरेली की जनता को संदेश दिया। उन्होंने कहा कि मेरा आंचल आपके प्रेम और आशीर्वाद से जीवनभर भरा रहा। आपके प्रेम ने मुझे कभी भी अकेले नहीं पड़ने दिया। मेरा सब कुछ आपका दिया हुआ है। मैं आपको अपना बेटा सौंप रही हूं। जैसे आपने मुझे अपना माना वैसे ही आपको राहुल को अपना मान कर रखना है, राहुल आपको निराश नहीं करेगा। उन्होंने कहा कि अमेठी–रायबरेली से हमारा रिश्ता 103 साल पहले किसान आंदोलन के समय से शुरू होता है और अब मैं अपना राहुल आपको सौंप रही हूं। इस दौरान सोनिया गांधी के साथ मंच पर कांग्रेस नेता राहुल गांधी और प्रियंका गांधी भी मौजूद रहीं। सोनिया गांधी ने कहा कि आपने मुझे सेवा करने का अवसर दिया। यह मेरे जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है। रायबरेली और अमेठी मेरा परिवार है। पिछले 100 साल से हमारे परिवार की जड़ें इस मिट्टी से जुड़ी हुई हैं। गंगा मां की माटी से रिश्ता रहा है। इंदिरा जी के दिल में रायबरेली के लिए एक अलग जगह थी। उनके मन में आपके प्रति असीम लगाव था। मैंने राहुल और प्रियंका को वही सीख दी है जो इंदिरा जी ने मुझे दी थी। सबका आदर करो। अन्याय और अधिकार की रक्षा के लिए जिससे भी लड़ना पड़े उससे लड़ो। आपके प्रेम ने मुझे कभी अकेले नहीं पड़ने दिया। मेरा सब कुछ आपका है।

आईटीआई मैदान में गठबंधन की सेवा संकल्प सभा में कांग्रेस और सपा ने मिलकर ताकत दिखाई। महंगाई से लेकर इलेक्टोरल बांड तक के मुद्दों पर भाजपा पर निशाना साधा। जनसभा को संबोधित करते हुए प्रियंका गांधी ने कहा कि पूरा देश देख रहा है। यह समाजवादी और कांग्रेस के कार्यकर्ता एक सैलाब बन गए हैं। पूरे देश को दिखाया है कि पूरे दिल से आप लगे हैं। परिश्रम किया है, यह रायबरेली क्षेत्र है। मेरे परिवार का रायबरेली से गहरा रिश्ता रहा है। इस रिश्ते को अटूट बनाने के लिए राहुल गांधी मैदान में हैं। दस साल से गरीब, किसान, मजदूर, महिलाएं परेशान हैं। जन जन की पुकार थी कि आपकी सुनवाई हो लेकिन नरेंद्र मोदी की सरकार में कोई सुनवाई नहीं हुई। आज इस देश में आंधी उठी है कि सत्ता से तानाशाही सरकार को हटाया जाए। रायबरेली की जनता ने 100 साल पहले आवाज उठाई थी। एक बार फिर रायबरेली देश को सत्ता परिवर्तन के लिए आवाज दे रहा है। सभा को संबोधित करते हुए अखिलेश यादव ने कहा जनसमर में बड़ी संख्या में सभी पदाधिकारी दिखाई दे रहे हैं। जहां से मैं चला हूं। लगातार सड़कों पर सैलाब दिखाई दे रहा है। पंडाल के बीच लोग दिखाई दे रहे हैं। यह जनसैलाब फैसला कर रहा है कि राहुल गांधी न केवल जीतेंगे बल्कि रिकार्ड जीत होगी। रायबरेली की यही राय है कि भाजपा यहां से जाए। देश के एक नेता हैं जो हर जगह अपना झूठा रिश्ता निकाल लेते हैं। वह भी देख लें और सुन लें कि राहुल का सच्चा रिश्ता रायबरेली से है। उन्होंने कहा कि एक और एक ग्यारह होता है और भाजपा नौ दो ग्यारह हो गई है। चार चरणों में भाजपा चारों खाने चित हो गई है।

अनुप्रिया पटेल ने किया मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने का आवाहन

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। लोकसभा चुनाव की को देखते हुये दलों के वरिष्ठ नेताओ की जनसभा तेज हो गई है इसी क्रम में भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशी हरीश द्विवेदी की जीत के लिये शुक्रवार को कप्तानगंज विधानसभा के बेलवरिया जंगल हलुआ में केंद्र सरकार की वाणिज्य एवं उद्योग राज्यमंत्री व अपना दल एस की राष्ट्रीय अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल की जनसभा हुई।

अपना दल एस की राष्ट्रीय अध्यक्ष जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश के मतदाताओं के पास एक अहम मौका है। अपनी आने वाली पीढ़ियों का भविष्य गढ़ने का। अपनी किस्मत अपने हाथ रचने का। मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाकर देश को मजबूत करें। अनुप्रिया पटेल शुक्रवार को कप्तानगंज विधानसभा क्षेत्र के कस्बा हलुआ स्थित रानीपुर बाबू के मैदान में भाजपा प्रत्याशी हरीश द्विवेदी के समर्थन में आयोजित जनसभा में बोल रही थीं। उन्होंने कहा कि बीते 10 सालों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश तरक्की की नई राह पर है। भारत की कीर्ति पूरी दुनिया में है। अन्य देश भारत के नक्शे कदम पर चलना चाहते हैं। देश में ऐसी सरकार है जो किसी देश की युद्ध भूमि से भारत के नागरिक

को सुरक्षित ले आती है। इसलिए वोट डालने जाएंगे तो अपने दिल पर हाथ रखकर बीते 10 साल व 70 साल की तुलना कर लेना। अपना दल एस की राष्ट्रीय अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल ने कहा कि देश में जब से एनडीए की सरकार आई है तब से कोई भी गांव व घर ऐसा नहीं जहां केंद्र सरकार की योजनाओं के लाभार्थी न हों। हमारी सरकार ने गरीबों को पक्का घर, इज्जत घर, निःशुल्क खाद्यान्न, रसोई गैस सिलेंडर, किसानों को सम्मान निधि सहित तमाम योजनाओं से लाभान्वित कर 25 करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से बाहर निकाला। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत विश्व की पांच सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन चुका है। अगले पांच सालों में हमारा देश विश्व के तीन विकसित राष्ट्रों में शामिल होगा। इस दौरान उन्होंने भाजपा पार्टी प्रत्याशी हरीश द्विवेदी के समर्थन में पार्टी के निशान कमल को कप प्लेट मान कर भारी मतों से विजयी बनाने की अपील की।

सांसद हरीश द्विवेदी ने कहाँ की कहा कि प्रधानमंत्री की दूरदर्शिता के कारण ही आज पूरे विश्वक में भारत को सम्मा न मिला है। उनके दृष्टिकोण से देश को आज ये मुकाम हासिल हुआ है। हम बस्ती की लोकसभा सीट जीतेंगे और पीएम मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाएंगे। इन चुनावों में सबसे बड़ा मुद्दा विकास है जो केंद्र की प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने 10 साल के कार्यकाल में और प्रदेश की 7 साल से ज्यादा की सरकार ने देशहित में किया है। यही कारण है कि आज मोदी की गारंटी के साथ जनता की गारंटी है।

जिलाध्यक्ष विवेकानन्द मिश्र ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ आज पूरा देश खड़ा है। वे प्रचंड बहुमत से तीसरी बार देश का नेतत्वि करेंगे। पीएम मोदी ने जन कल्या ण की हर वर्ग के लिए योजनाएं चलाई और इसका लाभ हर वर्ग के लोगों को मिल रहा है।

इस मौके पर लोकसभा संयोजक के डी चौधरी, विधानसभा प्रभारी यशकांत सिंह, विधानसभा संयोजक सुखराम गौड़, राधेश्याम कमलापुरी, जटाशंकर शुक्ल, अपना दल के जिलाध्यक्ष राजमणि पटेल, राना नागेश सिंह, भानु प्रकाश मिश्र विनोद सिंह, निर्मल सिंह, उमाशंकर पटवा, मंडल अध्यक्ष विजय गुप्ता, राम नयन पटेल, सुखराम पटेल, अमित शुक्ल, रामकुमार पटेल, संजय चौधरी, महिपाल पटेल, पूर्व प्रमुख अरविंद सिंह, चेयरमैन प्रबल मलानी, वरुण पाण्डेय सहित काफी संख्या में भाजपा व अपना दल के पदाधिकारी, कार्यकर्ता व आमजन मौजूद रहे।

गृहमंत्री अमित शाह की मौजूदगी में भाजपा में शामिल हुए मनोज पाण्डेय

रायबरेली (आभा)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा है कि कांग्रेस और इंडिया गठबंधन के लोग कह रहे हैं कि हम सत्ता में आएंगे तो राम मंदिर की पुनः प्राण प्रतिष्ठा करेंगे। यह लोग पुनः प्राण प्रतिष्ठा के नाम पर राम मंदिर में ताला लगवा देंगे। इंडिया गठबंधन कांग्रेस पार्टी का पारिवारिक गठबंधन है। इसमें शामिल लालू अपने बेटे को मुख्यमंत्री बनना चाहते हैं। ममता बनर्जी अपने भतीजे को मुख्यमंत्री बनना चाहती है। सोनिया गांधी अपने बेटे को प्रधानमंत्री बनना चाहती है।

गृहमंत्री अमित शाह जगतपुर ब्लॉक के दौलतपुर में भाजपा प्रत्याशी स्मृति ईरानी और दिनेश प्रताप सिंह के समर्थन में आयोजित जनसभा को संबोधित कर रहे थे। इस रैली में ही सपा से विधायक रहे मनोज पांडेय भाजपा में शामिल हो गए। इस मौके पर उनके साथ कई ब्लॉक प्रमुख भी भाजपाई हो गए। अमित शाह ने कहा कि शाह ने कहा कि यह लोग कहते हैं कि रायबरेली सीट उनकी पारिवारिक सीट है। कोई पारिवारिक सीट नहीं है। यह सीट रायबरेली और अमेठी के लोगों की है। वह जिसे चाहेंगे, उसको चुनेंगे, उसे संसद में भेजेंगे।

इस बार अमेठी से स्मृति जुबिन ईरानी और रायबरेली से दिनेश प्रताप सिंह दोनों चुनाव जीतकर संसद पहुंचेंगे, यह मेरा दावा है। कांग्रेस वाले व कांग्रेस के नेता मणि शंकर अय्यर, फारूक अब्दुल्ला, पाक अधिकृत कश्मीर को पाकिस्तान का बताते हैं। मैं उनको बताना चाहता हूं कि पाक अधिकृत कश्मीर भारत का था भारत का रहेगा उसे भारत से कोई नहीं छीन पाएगा। जल्द ही उसे भारत में मिलाया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने 370 को समाप्त किया। कांग्रेस उसे वापस लाना चाहती है लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि 140 करोड़ की जनता का नेतृत्व कर रहे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मोदी के 56 इंच के सीने के सामने किसी की हिम्मत नहीं है कि वह आंख उठाकर देखें।

उन्होंने कहा कि मैं राहुल बाबा को बताना चाहता हूं कि पाक अधिकृत कश्मीर वापस लेंगे। भाई नरेंद्र मोदी जी लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहे, लेकिन उन पर कोई भी आरोप नहीं लगा। कांग्रेस ने देश को लूटने का काम किया है। राहुल बाबा कान खोलकर सुन लो भ्रष्टाचार करने वाले नेता जेल जाएंगे। मोदी सरकार उन्हें किसी भी कीमत पर नहीं बख्शेगी।

उत्तर प्रदेश में नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में विकास हुआ। कल कारखाने लगे। उद्योग लगे। लोगों को रोजगार मिला। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी विकास कर रहे हैं तो नीचे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी गुंडों का सफाया कर रहे हैं। परिवारवाद की बात कहते हैं 70 सालों में अमेठी में कलेक्ट्रेट ऑफिस नहीं बना। स्मृति ईरानी जी जब वहां से सांसद बनी। योगी आदित्यनाथ जी की सरकार ने वहां पर कलेक्टर ऑफिस बनवाया। मैंने खुद उसका भूमि पूजन किया था। गांधी परिवार यहां लोगों को अपना मानते हैं। एनटीपीसी में 200 से ज्यादा लोगों की मौत हुई लेकिन सोनिया गांधी उनको देखने तक नहीं गई।

निष्पक्ष चुनाव हुए तो भाजपा का सफाया तय इनकी नाटकबाजी जनता समझ चुकी है –मायावती

प्रतापगढ़ (आभा)। लोकसभा चुनाव के पांचवें और छठें चरण में पार्टी प्रत्याशियों के प्रचार के लिए बसपा सुप्रीमो मायावती ने विश्वनाथगंज रेलवे स्टेशन के समीप जनसभा को संबोधित किया। संबोधन में उन्होंने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि यदि इस बार चुनाव फ्री एंड फेयर हुए, वोटिंग मशीनों में गड़बड़ी नहीं हुई तो भाजपा सरकार आसानी से नहीं बनने वाली।

जातिवादी, पूंजीवादी, सर्कीण, साम्प्रदायिक और द्वेषपूर्ण नीतियों, कथनी–करनी में अंतर होने की वजह से लगता है कि भाजपा केंद्र की सरकार में वापस नहीं आने वाली। इनकी नाटकबाजी और जुमलेबाजी को देश की जनता समझ चुकी है। अच्छे दिन जैसे हवा–हवाई वादे सहित इनके एक चौथाई वादों को जमीनी हकीकत नसीब नहीं हुई। इनका ज्यादातर समय इनके चहेते पूंजीपतियों व धन्नासेठों को मालामाल करने व हर स्तर पर बचाने में लगा रहा।

अपने संबोधन में पूर्व सीएम मायावती ने कहा, धन्नासेठों के आर्थिक सहयोग से ही भाजपा व अन्य पार्टियां अपना संगठन चलाती हैं और चुनाव लड़ाती हैं। जिसका खुलासा बांड प्रकरण में हुआ है। सुप्रीम कोर्ट के नोटिस देने के बाद इलेक्ट्रोरल बांड का खुलासा हुआ। रिपोर्ट आई तो आपको लगा होगा उसमें बीएसपी नहीं है। उसमें कांग्रेस, बीजेपी और अन्य विरोधी पार्टियां हैं। इन सबने देश के धन्नासेठों से बांड के जरिए करोड़ों–अरबों रुपया लिया है। उस रिपोर्ट में ये कहीं वर्णित नहीं है कि बसपा ने किसी भी पूंजीपति से एक भी रुपया लिया हो। इससे यह स्पष्ट है कि हमारी पार्टी पूरे देश में संगठन चलाने और चुनाव लड़ने के लिए धन्नासेठों से रुपया नहीं लेती है। बल्कि पार्टी की सदस्यता शुल्क और मेरे जन्मदिन पर थोड़ा–थोड़ा धन एकत्र करके और चुनाव के मौके पर धन एकत्र करके संगठन चलाती है। हमारी सरकार ने किसानों के हितों का भी हमने हर स्तर पर ध्यान रखा है। संबोधन में मायावती ने कहा वर्तमान केंद्र सरकार में दलितों, पिछड़ों और अल्प संख्यकों को शोषित किया जा रहा है। सरकार पूंजीपतियों के जरिए प्राइवेट कंपनियों से काम तो लिया जा रहा है लेकिन प्राइवेट सेक्टर की नौकरियों में आरक्षण का ध्यान नहीं दिया जा रहा है। सच्चर कमेटी की रिपोर्ट के मुताबिक अल्प संख्यकों का विकास होना, हिंदुत्व की आड़ में बंद हो गया। उच्च जातियों में गरीब वर्ग की हालत अच्छी नहीं है। सपा की सरकार हो या भाजपा की लेकिन दोनों सरकारों ने उच्च जातियों को दुखी किया है।

क्षय रोग के बारे में दिया जानकारी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बनकटी (बस्ती)। शुक्रवार को सीएचसी मुंडेरवा के मीटिंग सभागार में अधीक्षक डॉक्टर राजेश कुमार के नेतृत्व में क्षय रोग टीबी और अधिक से अधिक बलगम जांच कराने पर विस्तृत समीक्षा की गई। विश्व स्वास्थ संगठन सलाहकार और जिला कार्यक्रम समन्वयक अखिलेश चतुर्वेदी ने विस्तार से जानकारी दी । बीपीएम संतोष सिंह,शशि सिंह एसटीएस धर्मेंद्र यादव और एसटीएलएस दुर्गेश उपाध्याय और सीएचओ समस्त एएनएम उपस्थित रहे ।

भाजपा की जीत के लिये पूर्व विधायक दयाराम चौधरी ने झोंकी ताकत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। भारतीय जनता पार्टी के पूर्व विधायक दयाराम चौधरी ने लोकसभा के चुनाव में लोकसभा प्रत्याशी हरीश द्विवेदी को तीसरी बार सांसद बनाने के लिये ताकत झोंक दिया है। शुक्रवार को उन्होने पार्टी नेताओं, कार्यकर्ताओं और स्थानीय नागरिकों के साथ नगर पंचायत गनेशपुर क्षेत्र में घर–घर जाकर और दूकानों, प्रतिष्ठानों पर भाजपा प्रत्याशी की जीत के लिये सघन सम्पर्क किया।

सम्पर्क के दौरान पूर्व विधायक दयाराम चौधरी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की कल्याणकारी नीतियों का परिणाम है कि मतदाता जाति, धर्म क्षेत्रवाद को नकारकर भाजपा के पक्ष में खड़े है। जनता विकास चाहती है। देश

के लगभग 80 करोड़ जनता को निःशुल्क खाद्यान्न, बेहतर सड़के, बिद्युत आपूर्ति, 5 लाख रूपये का स्वास्थ्य बीमा और 70 वर्ष के बुर्जुगों के निःशुल्क इलाज का निर्णय लेकर भाजपा ने मतदाताओं का दिल जीत लिया है। उन्होने दावा किया कि अपने जनहितकारी नीति और कार्यक्रम के तहत केन्द्र में भाजपा गठबंधन की तीसरी बार पूर्ण बहुमत की सरकार बनेगी और नरेन्द्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बनकर देश के विकास को गति देंगे।

मतदाताओं से सम्पर्क के दौरान भाजपा नेता दयाराम चौधरी के साथ मुख्य रूप से दीपू श्रीवास्तव, राजन श्रीवास्तव, अर्जुन चौधरी, गजेन्द्र चौधरी, अर्जुन यादव, जगदम्बा चौधरी, महेन्द्र ,रविन्द्र मिश्रा ,पवन मिश्रा, अर्जुन यादव, परशुराम यादव, आशीष चौधरी, राजन पाण्डेय, चन्द्रभान,मनीष चौधरी आदि कार्यकर्ताओं के साथ ही स्थानीय नागरिक शामिल रहे।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"—वेंडेल फिलिप्स

दैनिक भारतीय बस्ती

बस्ती 18 मई 2024 शनिवार

सम्पादकीय

उदासीन मतदाता और लोकतंत्र

राजनीतिक दलों और लोकतंत्र के अनुरागियों के लिये यह गंभीर चिंता का विषय होना चाहिए कि आखिर चरण—दर—चरण मतदान में कमी क्यों देखी जाती रही है। निश्चित रूप से मतदान प्रतिशत में कमी चुनाव आयोग के लिये भी मंथन का विषय होना चाहिए। अब तक हुए चार चरणों में हुए मतदान के प्रतिशत में पिछले आम चुनाव के मुकाबले कमी देखी गई है। इस कमी के रुझान ने सत्ता के आकांक्षी राजनीतिक दलों की नींद उड़ायी है। हालांकि, सत्ता पक्ष व विपक्ष मतदान में कमी की अपनी सुविधा से व्याख्या कर रहे हैं। सत्ता पक्ष के नेता कह रहे हैं कि वोट विपक्षी दलों के घटे हैं। वहीं विपक्ष इसकी व्याख्या सत्ता पक्ष से मोहभंग के रूप में कर रहा है। कुछ लोग मतदान में कमी की वजह गर्मी व प्रतिकूल मौसम को बता रहे हैं। तो कुछ लोग कह रहे हैं, जब पहले ही कहा जा रहा था कि अबकी बार फलां आंकड़ा पार तो फिर ज्यादा मतदान की क्या आवश्यकता है। बहरहाल, मतदान में कमी को राजनेताओं के प्रति घटते विश्वास के रूप में भी देखा जाना चाहिए। दरअसल, कथनी—करनी के फर्क से जनता राजनेताओं से इतनी खिन्न हो चुकी है कि वह नेताओं के वायदों—इरादों पर विश्वास करने से गुरेज करती है। बार—बार छलने से उसका राजनेताओं से मोहभंग होता जा रहा है। दरअसल, सत्ता केंद्रित राजनीति के चलते सत्ता के दंभ से लेकर दल—बदल और सरकारें बनाने—गिराने के खेल से देश का जनमानस व्यथित है। आये दिन लगने वाले आरोप—प्रत्यारोप व नकारात्मक राजनीतिक हथकंडों ने बार—बार जनता का मोह भंग ही किया है। उसे लगता है कि क्या मेरे मतदान कुछ बदलेगा भी? एक राजनेता एक बार किसी दल से चुनाव लड़ता है और फिर पाला बदलकर दूसरे दल में चला जाता है, उससे क्या लोकतंत्र का भला होगा? ऐसे ही कई सवाल मतदाता को आये दिन हैरान—परेशान करते रहते हैं। जिसका असर कालांतर मतदान प्रतिशत पर भी पड़ता है।

बहरहाल, जम्मू—कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटने के बाद हुए पहले मतदान में प्रतिशत का अधिक रहना सुखद ही है। जो घाटी के लोगों के लोकतांत्रिक प्रक्रिया में विश्वास बढ़ने को दर्शाता है। कालांतर ये इस केंद्रशासित प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा दिलवाने और यथाशीघ्र विधानसभा चुनाव करवाने का मार्ग भी प्रशस्त करेगा। बहरहाल, पूरे देश में चुनाव प्रतिशत में कमी के रुझान पर चुनाव आयोग को भी गंभीर मंथन करना चाहिए कि मतदान बढ़ाने के लिये देशव्यापी अभियान चलाने के बावजूद वोटिंग अपेक्षाओं के अनुरूप क्यों नहीं हो पायी। वहीं राजनीतिक दलों को भी आत्ममंथन करना चाहिए कि मतदाता के मोहभंग की वास्तविक वजह क्या है। उन्हें अपनी रीतियों—नीतियों तथा घोषणापत्रों की हकीकत को महसूस करना होगा। यह भी कि जनता में यह धारणा क्यों बन रही है कि वायदे सिर्फ वायदे बनकर ही रह जाते हैं। कुल मिलाकर देश में राजनीतिक धारा को लेकर जनता में जो अविश्वास गहरा हो रहा है, उसे यदि समय रहते दूर करने का प्रयास न किया गया तो आने वाले समय में उसके नकारात्मक परिणाम सामने आ सकते हैं। राजनीतिक दलों को एक—दूसरे पर आक्षेप करने का अधिकार है, लेकिन गरिमा बनी रहे। नेताओं को फेक न्यूज का सहारा लेने से बचना चाहिए। आरोपों के स्तर में लगातार आ रही गिरावट भी गंभीर चिंता का विषय है। इससे धीरे—धीरे जनप्रतिनिधियों व जनता के बीच दूरी बढ़ती जा रही है। जो विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की प्रतिष्ठा के अनुरूप कदापि नहीं कहा जा सकता। इसके साथ ही यह भी चिंतन करना होगा कि आजादी के साढ़े सात दशक बाद भी क्यों हम आम मतदाता को इतना जागरूक नहीं कर पाये कि वो वोट डालने को अपना नैतिक दायित्व मान सके। आंध्र प्रदेश की वे घटनाएं विचलित करती हैं जिसमें कुछ मतदाताओं ने मतदान की पूर्व संध्या पर हंगामा किया कि उन्हें वोट के बदले मिलने वाले रुपये कम मिले या नहीं मिले। इसी तरह आंध्र प्रदेश में ही एक रेजीडेंट वेलफेयर एसोसिएशन ने वोट के बदले कॉलोनी के लिये जनरेटर आदि की मांग की। निस्संदेह, बेशकीमती वोट की ऐसी सौदेबाजी भी हमारी गंभीर चिंता का विषय होना चाहिए।

युवाओं को प्रशिक्षण के अधिकार का यक्ष प्रश्न

—संतोष मेहरोत्रा—

कांग्रेस ने 2024 के आम चुनाव के जारी अपने घोषणा पत्र में उच्चतर सर्टिफिकेट, डिग्री, डिप्लोमाधारी तमाम युवाओं को प्रशिक्षुता का अधिकार देने का वादा किया है। यह संकल्प 25 वर्ष से नीचे के सभी युवाओं को उन जगहों पर प्रशिक्षण और रोजगार की गारंटी सुनिश्चित करता है जहां पर वे प्रशिक्षु रहते हुए कौशल सीखेंगे। यह प्रारूप जर्मनी के कौशल मॉडल सिद्धांत पर आधारित है (जहां स्कूली शिक्षा पाने के दौरान छात्रों को किसी न किसी काम का कार्यानुभव करवाया जाता है)। भारत में व्यवसायिक कौशल परिदृश्य सदा से आपूर्ति—संचालित रहा है, जिसमें विद्यार्थी को शिक्षा तो मिलती है लेकिन असल मायने में कोई व्यावसायिक कौशल नहीं सिखाया जाता। इस व्यवस्था में, रोजगार प्रदाताओं का उनसे न तो कोई सीधा संपर्क होता है न ही उन्हें प्रशिक्षु—कामगार रखने की जरूरत महसूस होती है। यह स्थिति भारत में सरकार के कौशल विकास कार्यक्रम की कारगुजारी की समीक्षा करने की जरूरत दर्शाती है और यह भी कि क्योंकर प्रशिक्षुता का अधिकार सुधार लाने की दिशा में एक सही कदम होगा।

भारत में 2000 के दशक तक, लगभग आधी सदी तक व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण का क्षेत्र उपेक्षित रहा है (यह भारत की योजना नीतियों में समुचित स्कूली शिक्षा पर ध्यान न देने जैसा है) जिसकी कीमत आज हम चुका रहे हैं। वर्ष 1991 में, जब भारत में आर्थिक सुधार होने शुरू हुए, साक्षरता दर 51 प्रतिशत थी, अर्थातद्द भारत की कुल आबादी का आधा हिस्सा अनपढ़ था और यह तबका अधिकांशतः कृषि क्षेत्र में केंद्रित था। हालांकि 1990 के दशक में स्कूली शिक्षा पर अधिक खर्च करने के रूप में नए सिरे से जोर देना शुरू हुआ परंतु शिक्षा के साथ व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षण देना फिर भी उपेक्षित बना रहा (हालांकि उच्च तकनीकी शिक्षा में ऐसा नहीं था)। 11वीं पंचवर्षीय योजना (2007—12) पहली ऐसी थी जिसमें कौशल विकास के विषय पर एक अलग से अध्याय था।

परिणामस्वरूप, भारत का उत्पादन क्षेत्र एवं सेवा श्रम बल की संरचना आज भी निम्न शिक्षा वालों से बनी है। बदतर स्थिति यह कि राष्ट्रीय सैम्पल सर्वे विभाग का रोजगार—बेरोजगारी अध्ययन 2011—12 बताता है कि श्रम बल का महज 2.2 प्रतिशत हिस्सा औपचारिक प्रशिक्षु श्रेणी से है। आवधिक श्रम बल सर्वे के आंकड़े दर्शाते हैं कि औपचारिक व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त श्रमिकों की संख्या वर्ष 2011—12 में 2.2 फीसदी थी (1 करोड़ 43 लाख) जो 2017—18 में घटकर 2 प्रतिशत (91 लाख 40 हजार) रह गई। लेकिन अगले पांच साल यानी 2022—23 में यह 3.7 फीसदी (2 करोड़ 5 लाख) हो गई। इसलिए, जिन्हें हम व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित कह सकते हैं, वे कहां से आन जुड़े?

आवधिक श्रमबल सर्वे—2017—18 बताता है कि कुल व्यावसायिक प्रशिक्षुओं में 22 फीसदी वह थे जिन्होंने 6 माह से कम अवधि का कोर्स किया हो, अब यह अंश बढ़कर 37 प्रतिशत हो गया है। अधिक चिंताजनक यह कि 2017 में 29 फीसदी प्रशिक्षु ऐसे थे जिन्होंने दो साल या अधिक अवधि के कोर्स किए थे, जो अब घटकर 14.29 फीसदी रह गए हैं। भारत कौशल मिशन नामक कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षुता अवधि बहुत कम है (कुछ मामलों में तो महज 10 दिन)।

वर्ष 1961 से भारत का अपना प्रशिक्षुता अधिनियम है, जिसके तहत तमाम पंजीकृत कंपनियों और उद्यमों के लिए जरूरी है कि वे अपने यहां एक साल या उससे अधिक अवधि के लिए प्रशिक्षु रखें ताकि वे नौकरी पर रहते हुए व्यावयायिक दक्षता हासिल कर पाएं। दस साल पहले गैर—कृषि उद्यम वर्ग में लगभग 2,50,000 पंजीकृत प्रशिक्षुक थे। अगस्त, 2016 में, भारत सरकार ने राष्ट्रीय प्रशिक्षुता प्रोत्साहन योजना शुरू की, जिसके लिए 10,000 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा गया। हालांकि इसका उद्देश्य था कि वर्ष 2020 तक 50 लाख युवा प्रशिक्षु बनकर कौशलयुक्त हो सकेंगे लेकिन 2022 तक 20 लाख ही बन पाए। 2017 से 2022 के बीच, इस योजना के लिए रखे गए 10,000 करोड़ रुपये में केवल 650 करोड़ रुपये ही राज्यों को मिले। 2023 में राष्ट्रीय प्रशिक्षुता योजना—2 शुरू की गई, लेकिन इसके आंकड़े फिलहाल उपलब्ध नहीं हैं।

2022 में आए अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के एक अध्ययन का निष्कर्ष था कि 1961 वाले अधिनियम में किए गए संशोधन भारत में प्रशिक्षुओं की संख्या में बढ़ोतरी करने में सहायक रहे। 2022—23 में कुल 57 करोड़ श्रम बल में औपचारिक प्रशिक्षुता वर्ग में आने वालों की गिनती केवल 5 लाख के आसपास थी, हालांकि दस साल पहले यह संख्या 2.5 लाख थी। स्पष्ट है कि संशोधनों का परिणाम चमत्कारी नहीं रहा। इसमें हैरानी नहीं होनी चाहिए, क्योंकि लगभग संपूर्ण निजी कॉर्पोरेट सेक्टर अपने यहां प्रशिक्षुता योजना लागू करने के प्रति ज्यादातर उदासीन रहा है। केवल केंद्रीय और राज्यों के सरकारी उद्यम इस अनिवार्यता को पूरा करने में यत्न करते दिखाई देते हैं। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तो अभी भी इस योजना से आंखें फेरना जारी रखे हुए हैं। नतीजतन, जहां जर्मनी के कुल 4 करोड़ 60 लाख श्रमबल में से कम से कम 60 लाख प्रशिक्षु श्रेणी से हैं, वहीं भारत में इनकी गिनती केवल 5 लाख है। यह अंतर उद्यमधनियोक्ता की रोजगार पूर्व प्रशिक्षण में भागीदारी के स्तर की वजह से है, जो भारत को आपूर्ति—संचालित बनाता है, जबकि दुनियाभर में व्यावसायिक प्रशिक्षुता प्रशिक्षण कार्यक्रम मांग—संचालित हैं।

भारत में प्रति वर्ष श्रम बल में 60 लाख नये रोजगार अभिलाषियों के जुड़ने और पहले से 10 करोड़ से अधिक खाली बैठे युवाओं के चलते (जो न तो शिक्षा क्षेत्र में हैं न ही किसी नौकरी या प्रशिक्षण में) जिस चीज की फौरी जरूरत है, वह है उनकी शिक्षा के हिसाब से काम मिलना, फिर चाहे यह शिक्षा सामान्य प्रवृत्ति वाली हो या व्यावसायिक या फिर तकनीकी। इसके लिए जरूरत है केंद्रीय सरकार के गंभीर चिंतन और नियोक्ताओंध्उद्योग जगत को साथ जोड़कर कौशल विकास प्रक्रिया फौरी शुरू करवाने की। यह फौरी जरूरत निम्न तथ्यों से बनती है : भारत कौशल रिपोर्ट 2021 की दलील है कि भारत में स्नातक स्तर की शिक्षा प्राप्त युवाओं में लगभग आधे खाली बैठे हैं। वर्ष 2012 में मुक्त बेरोजगारी लगभग 2.1 फीसदी थी जो 2018 में तीन गुणा बढ़कर 6.1 प्रतिशत हो गई, यह दर पिछले 45 सालों के सर्वे में उच्चतम है।

शिक्षित बेरोजगार, कौशल कार्यक्रम के प्रति अनिच्छुकता, घटिया दर्जे का प्रशिक्षण और पढ़ाई उपरांत नौकरी मिलने की नगण्य दर के आलोक में कौशल परिदृश्य में आमूलचूल परिवर्तन करना एक त्वरित आवश्यकता बन गई है। केवल बड़ी—बड़ी बातें करने और बढ़ा—चढ़ाकर पेश किए सरकारी आंकड़ों से काम नहीं बनने वाला। सरकार के लिए गिनती की बजाय गुणवत्ता को तरजीह देना लाजिमी हो ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि इन कार्यक्रमों से निकलकर आया हर कोई श्रम बल में अर्थपूर्ण योगदान कर पाए। कौशल विकास नीतियां और कार्यक्रम विफल सिद्ध हुए हैं, उनमें स्विट्जरलैंड और जर्मनी के मॉडल की तर्ज पर आमूलचूल सुधार करने की आवश्यकता है, जिसमें युवा और उद्योग को ध्यान के केंद्र में रखा जाता है। प्रत्येक युवा के लिए प्रशिक्षुता का अधिकार सुनिश्चित करना एक फौरी तरजीह हो।

—लेखक आईजेडए इंस्टिट्यूट ऑफ लेबर इकॉनोमिक्स, जर्मनी में रिसर्च फैलो हैं।

झूठे वायदों पर कितना भरोसा

— ललित गर्ग—

लोकसभा चुनाव के चार चरण पूरे हो गये हैं, पांचवें चरण की ओर बढ़ते हुए चुनावी सरगर्मी बढ़ रही है। तमाम राजनीतिक दलों में वास्तविकता से दूर झूठे, तथ्य—आधारहीन, भ्रामक एवं बेबुनियाद वादे करने की आपसी होड़ बढ़ती जा रही है। राजनीतिक दल चार चरणों के बाद जिस तरह के जीत के तथ्य प्रस्तुत कर रहे हैं, वह हास्यास्पद एवं अविश्वसनीय है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने दावा किया कि लोकसभा चुनाव के 4 चरण पूरा होने के बाद विपक्षी 'इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस' यानी इंडिया गठबंधन मजबूत स्थिति में है और चार जून के बाद सरकार बनाएगा। इसी तरह ममता बनर्जी, अरविन्द केजरीवाल एवं अखिलेश यादव ने भारतीय जनता पार्टी की करारी हार की बात कही है। वर्ष 2019 के चुनाव के दौर भी इन नेताओं ने ऐसे ही बयान दिये थे, जो चुनाव परिणाम के बाद झूठे साबित हुए। इस तरह के अतिश्योक्तिपूर्ण, आधे—अधूरे, सत्यता से परे के बयानों से राजनीतिक दलों की विश्वसनीयता अपने निचले पायदान पर पहुंच चुकी है और तेजी से घट रही है। जिस प्रकार विभिन्न दलों के नेताओं की भाषा, बयान एवं लोकलुभावन वायदे निम्न स्तर पर पहुंच रहे है, उसे देखकर कहा जा सकता है कि हमारे लोकतंत्र का स्वास्थ्य कहीं—ना—कहीं खराब जरूर हो रहा है।

आम आदमी पार्टी (आप) के वादे और उनके काम के बीच फासला लगातार बढ़ता रहा है, देश की भोली भाली जनता को आपका बेटा, आपकी बेटी कहकर सहानुभूति पाने की उसकी कुचेष्ठाओं का पर्दाफाश पहले ही हो गया है। 'आप' ने अपने कामकाज के तरीके में पूरी पारदर्शिता का वादा किया था, लेकिन लोकसभा के लिए उम्मीदवारों के चयन में इसका ख्याल नहीं रखा गया है। हाल ही में पंजाब की चुनावी सभाओं में पार्टी नेता अरविन्द केजरीवाल ने बृजभूषण पर तो गंभीर आरोप लगाते हुए भाजपा को दागगार घोषित किया लेकिन वे अपने ही मुख्यमंत्री निवास पर राज्यसभा सांसद एवं पूर्व दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाती मालीमाल के साथ हुई मारपीट एवं अशिष्टता को भूल गये। निश्चित ही आप की कथनी और करनी में गहरा फासला है। इन्हीं केजरीवाल ने जनता को गुमराह करने एवं ठगने के लिये पिछले गुजरात के विधानसभा चुनाव में प्रचार के दौरान एक सादे कागज पर अपने हस्ताक्षर करते हुए गुजरात में आप की सरकार बनने का दावा किया, जबकि उन चुनावों में आप के 4—5 सीटों पर जीत के अलावा सभी सीटों पर आप उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गयी थी। एक बार फिर इन लोकसभा चुनावों में वे ऐसा ही करते हुए झूठे दावे कर रहे हैं। इससे आप पार्टी की विश्वसनीयता एवं पारदर्शिता के दावों पर सवालिया निशान लग रहे हैं।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने हाल ही में दावा किया है कि उनकी पार्टी 2009 के आम चुनाव से बेहतर प्रदर्शन करेगी। यह दावा वास्तविकता से कोसों दूर है और राजनीतिक हलकों में उपहास का विषय बन गया है। जब कांग्रेस ने इन चुनावों में कोई लक्ष्य ही तय नहीं किया है तो कौन से लक्ष्य को पाने एवं जीत की बात कांग्रेस कर रही है? जैसे भाजपा ने 400 पार का लक्ष्य बनाया है, क्या कांग्रेस का ऐसा कोई लक्ष्य है? पार्टी के कार्यकर्ता बिना लक्ष्य के किसे अपना मिशन बनाये? कांग्रेस का एक दावा ये भी है कि वो लोकसभा में साफ सुथरी छवि वाले उम्मीदवारों को उतार रही है लेकिन वास्तविकता इसके उलट है। कई उम्मीदवारों को भ्रष्टाचार के उन आरोपों के बाद भी टिकट दिए गए हैं जिसकी जांच सीबीआई कर रही है। हाल के दिनों में, प्रत्येक राजनीतिक दल के घोषणापत्र में वादों की लंबी चौड़ी फेहरिस्त सामने आयी है। जबकि अतीत में किए उनके काम बताते हैं कि सत्ता में आने के बाद वे अपने घोषणा पत्र के कुछ ही हिस्सों को लागू कर पाते हैं। जो सत्ता में नहीं आ पाते वो अपने घोषणापत्र को कूड़े के डब्बे में डाल देते हैं। विडम्बना तो यह भी है कि जिन दलों को चुनाव जीतने की आशा नहीं है, वे बेतूके वायदे एवं घोषणाएं करके आम मतदाता को भ्रमित करते हैं। शुरुआत से ही राजनीतिक दल वादे इसलिए करते हैं कि लोग उन्हें सत्ता की चाभी सौंपें। लेकिन चुनावी मौसम में राजनीतिक दल और राजनेता अपने अपने कामों के बारे में बढ़ चढ़कर दावे करते हैं और उन्हें भरोसा रहता है कि मासूम और भोली जनता उनके दावों पर यकीन कर लेगी, इसलिए वे लुभावने वादों की झड़ी लगा देते हैं। कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने उत्तरप्रदेश की एक सभा में चार चरण पूरे होने के बाद भाजपा के 5 किलो मुफ्त अनाज की जगह 10 किलो मुफ्त अनाज की घोषणा कर है। बेवक्त पर की गयी यह घोषणा भी पार्टी की अपरिपक्वता को उजागर कर रही है। हालांकि ऐसे वादे हमेशा खाली जाते हैं या अधूरे रहते हैं। वादे करने का मतलब उसे पूरा करना ही नहीं होता। अतीत में, कांग्रेस की पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने गरीबी हटाओ के नारे के साथ 1971 का चुनाव जरूर जीता था। लेकिन लगातार दो बार सत्ता में आने के बाद भी देश से गरीबी नहीं हटी क्योंकि ज्यादातर सरकारी योजनाएं आम गरीबों तक पहुंची ही नहीं। अतीत गवाह है विगत दावों और वादों की हकीकत का। हालांकि यह देखना बाकी है कि किसने सबक लिया और कौन अपने वादों और दावों के प्रति गंभीर रहेगा।

कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे और समाजवादी पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव ने राजधानी लखनऊ में एक ज्वाइंट प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान सपा प्रमुख ने दावा किया कि विपक्षी इंडिया' गठबंधन उत्तर प्रदेश में 79 लोकसभा सीटें जीतेगा, और सिर्फ एक सीट पर ही मुकाबला है। ऐसे अतिश्योक्तिपूर्ण बयान कभी सच होते हुए नहीं देखें गये हैं। निश्चित ही चुनाव परिणाम भविष्य के गर्भ में है एवं इसकी 4 जून को घोषणा सभी के लिये आश्चर्यकारी एवं चमत्कृत करने वाली होगी। देश का अगला प्रधानमंत्री चुनने के लिए चार चरणों की वोटिंग पूरी हो चुकी है। लोकसभा की कुल 543 सीटों में 380 सीटों के लिए वोट डाले चुके हैं। इन चार चरणों की वोटिंग के बाद हर राजनीतिक दल हवा का रुख भांपने को कोशिश कर रहा है लेकिन उनका यह आकलन सत्य से परे हो, बिलकुल ही आधारहीन हो, इसे लोकतंत्र के स्वास्थ्य के लिये अनुकूल नहीं माना जा सकता। यहां सत्ताधारी भाजपा से लेकर विपक्षी कांग्रेस सभी अपनी—अपनी जीत का दावा कर रहे हैं। भाजपा के वरिष्ठ नेता और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने इन चार चरणों में 270 सीटें जीतने का दावा करते हुए 400 का टार्गेट आसानी से पूरा करने की बात कही, वहीं कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने इंडिया गठबंधन की सरकार बनने का दावा किया है।

भाजपा ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में जो वायदें किये, उन्हें पूरा किया। 1990 के दशक और 21वीं शताब्दी के शुरुआती सालों में भारतीय जनता पार्टी अयोध्या में भव्य राम मंदिर बनाने के वादे के साथ सत्ता में आई एवं उसने मन्दिर बना दिया। भाजपा ने खुद्द को पार्टी विद डिफरेंस कहकर भी प्रचारित किया और जम्मू कश्मीर के विशेष दर्जे को खध्त्म करने का वादा भी किया। उसने वह भी पूरा किया। पिछले 10 वर्षो में देश ने विकास की जो रफ्तार पकड़ी है, उसे देश एवं दुनिया खुली आंखों से देख रही है। फिर भी चुनाव का समय मतदाताओं के जागने एवं विवेक से अपना मतदान करने की अपेक्षा करता है।

खानपान से सुधारे जीवन शैली

सामान्य शब्दों में कहें तो हमारा हृदय धमनियों में रक्त प्रवाह को गति देने हेतु जो दबाव बनाता है, वह रक्तचाप कहलाता है। यह दबाव सामान्य से अधिक हो जाता है तो उच्च रक्तचाप कहलाता है। जब लंबे समय तक शरीर में सामान्य से अधिक रक्तचाप बना रहता है तो हृदय संबंधी विकार, शरीर में खून के थक्के जमना तथा गुर्दों पर घातक प्रभाव पड़ने का खतरा बना रहता है। दरअसल, उच्च रक्तचाप हमारे परिवेश—जीवन शैली से उपजा रोग है। अमेरिका जैसे विकसित देश में वयस्कों की एक तिहाई आबादी का उच्च रक्तचाप से पीड़ित होना आधुनिक सभ्यता की विसंगति दर्शाता है। यूं तो स्वस्थ मनुष्य के शरीर में रक्तचाप के मानक सिस्टोलिक व डायस्टोलिक आधार पर पूरी दुनिया में एक जैसे ही हैं, लेकिन बाजार की दखल से इसमें बदलाव भी दिखे हैं। हालांकि, दैनिक जीवन में रक्तचाप में उतार—चढ़ाव होते रहते हैं। हमारे जागने—सोने की स्थिति में यह बदलता है। हमारी अतिसक्रियता, खुशी, उदासी व उत्तेजना के क्षणों में रक्तचाप परिवर्तनशील होता है। लेकिन इसके स्तर में वृद्धि का बना रहना, चिंता का विषय होता है, जिसके लिये योग्य चिकित्सक से सलाह व उपचार लेना बेहतर रहता है। दरअसल, वर्तमान समय में खानपान की विसंगतियों व जीवनशैली में आयी कई प्रकार की विकृतियों की वजह से यदि धमनियों में रक्त प्रवाह बाधित होता है तो उच्च रक्तचाप की समस्या जन्म लेती है।

यदि किसी व्यक्ति का रक्तचाप लगातार 140/90 से अधिक रहता है तो यह उच्च रक्तचाप की स्थिति कही जा सकती है। जिसके सामान्य लक्षणों में शरीर में थकावट महसूस होना, सांस फूलना, सिरदर्द या भारीपन, नींद में व्यवधान, हृदयगति बढ़ जाना, मन उचाट होना, कान गर्म होना तथा छाती में खिंचाव या असामान्य महसूस होना शामिल है।

ऐसा माना जाता है कि यह रोग उम्र बढ़ने के साथ बढ़ता है क्योंकि हमारी धमनियों में संकुचन बढ़ता है। जिसमें हमारे निष्क्रिय जीवन की भी भूमिका होती है। पुरुषों में यह स्थिति महिलाओं की अपेक्षा जल्दी आती है। पुरुषों में पैंतालिस व स्त्रियों में पचपन के बाद ऐसा होना सामान्य है। कई विकसित देशों में साठ वर्ष के बाद लगभग आधी आबादी इसकी चपेट में नजर आती है। यह ध्वंशानुगत रोग भी है। यदि परिवार के किसी व्यक्ति को अतीत में यह रोग रहा हो तो बच्चों में होने की संभावना बढ़ जाती है। वहीं पुरुषों में महिलाओं के मुकाबले यह समस्या कुछ ज्यादा होती है। ज्यादा तला—भुना खाने, अधिक मसालेदार भोजन करने, अधिक नमक का उपयोग, योग, व्यायाम व सैर न करने, नियमित शराब का सेवन, धूम्रपान करने, कार्यालय में अधिक तनावपूर्ण हालात उच्च रक्तचाप की स्थितियां बनाती हैं। खाने में पोटेशियम की अधिक मात्रा भी नुकसानदायक हो सकती है।

दरअसल, उच्च रक्तचाप का सीधा असर हमारे हृदय पर पड़ता है। वह या तो कमजोर हो जाता है या फिर उसके आकार में वृद्धि हो सकती है। जो कालांतर हृदयाघात का कारण बनता है। धमनियों में विकार आने से शरीर में सामान्य रक्त—संचरण नहीं हो पाता। जिससे शरीर के मुख्य घटकों में विकार उत्पन्न होते हैं। वहीं गुर्दे में सामान्य रक्त प्रवाह न होने से इससे जुड़े गंभीर रोग होते हैं। दरअसल, रक्त—वाहिकाओं के संकुचित होने से दिल, दिमाग, गुर्दे फेल होने, पक्षाघात जैसे अनेक रोग पैदा हो सकते हैं।

यदि उच्च रक्तचाप के मूल में आनुवंशिक कारणों को नजरअंदाज कर दें, तो हमारी जीवन शैली—खानपान की आदतों का बड़ा रोल होता है।—प्रस्तुति— विजय

रामद्रोहियों, राष्ट्रविरोधियों की जमानत जब्त करा दो -सीएम योगी

संवाददाता–बलरामपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यानाथ ने गोंडा संसदीय क्षेत्र के उतरौला विधान सभा के इटवा गांव में जनसभा कर सपा व कांग्रेस पर कड़ा प्रहार किया। उन्होंने लोगों से कहा कि राम द्रोहियों, राष्ट्र विरोधियों और हमारे मंदिरों पर हमला करने वाले आतंकियों के मुकदमे वापस लेने वालों, राम भक्तों पर गोली चलाने वालों की जमानत जब्त करा दो। उन्होंने कहा कि अयोध्या में 500 वर्षों का इंतजार समाप्त हुआ। रामलला विराजमान हुए, रामलला का मंदिर बनना चाहिए, इसकी रणनीति बलरामपुर जनपद में ही बनी थी। इसलिए आपका रामलला पर सबसे ज्यादा अधिकार है। क्या सपा यह काम कर पाती? यह काम हो पाया है मोदी जी के नेतृत्व के कारण। जनता जनार्दन के दम से ही असंभव काम भी संभव हो पाया है। उन्होंने कहा कि चार चरणों में 285 लोकसभा सीटों पर अब तक चुनाव हुए हैं और मुझे नौ राज्यों में जाने का अवसर मिला है। चारों ओर एक ही नारा है फिर एक बार मोदी सरकार... अबकी बार 400 पार। 400 पार की बात करते हैं तो लोग कहते हैं कि कैसे होगा, जनता कहती है कि जो राम को लाएं हैं, हम उनको लाएंगे। समाजवादी पार्टी व कांग्रेस के लोग राम द्रोही हैं, राम के विरोधी तो हैं ही राष्ट्र विरोधी हैं, समाज को जाति के नाम पर लड़ाने वाले हैं, यह चुनाव रामद्रोही व रामभक्तों के बीच हैं।

उन्होंने कहा कि इंडी गठबंधन के लोग बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर साहब का अपमान करने वाले हैं, आरक्षण में सेंध लगाना चाहते हैं। तुष्टीकरण की नीति पर चल करके भारत के अंदर इनके द्वारा जो खेल खेला जा रहा है। वह भारत को अस्थिरता व अराजकता की ओर धकेल देगा। यह वही लोग हैं, जिन्होंने भारत के सामने, नौजवानों व नागरिकों के सामने पहचान का संकट खड़ा किया था। कांग्रेस की सरकार में भ्रष्टाचार के कारनामे रोज आते थे। सुबह उठते ही पहला समाचार भ्रष्टाचार का देखने को मिलता था, सायंकाल होते– होते आतंकी वारदात की खबर आती थी। उन्होंने कहा कि गोंडा जिले में खाद्यान्न घोटाला समाजवादी पार्टी की सरकार में हुआ था। इन लोगों ने गरीबों के राशन पर डकैती डाली, नौजवानों की नौकरी पर डकैती डाली। इनके बेटी और व्यापारी की सुरक्षा खतरे में पड़ी थी, देश के अंदर अराजकता का वातावरण पैदा हुआ था। यह लोग भारत के विकास को बाधित करने वाले हैं। गरीबों का राशन हड़पने वाले अब आटा–डाटा देने की बात करते हैं। इनका विश्वास मत करना। दूसरी तरफ मोदी के नेतृत्व में रामभक्तों की टीम खड़ी है। रामभक्तों के लिए देश सर्वोपरि है। जनता जर्नादन की सेवा महत्वपूर्ण है। रामभक्तों के लिए आत्मनिर्भर और विकसित भारत बनाना ही महत्वपूर्ण है इसलिए रामभक्तों में एक झटके ने देश के अंदर आतंकवाद, नक्सलवाद की समस्या का समाधान किया। दुनिया के अंदर भारत का सम्मान भी बढ़ाया है।

सीएम योगी ने कहा कि अब आप देख सकते हैं पहले कांग्रेस के समय में आतंकी विस्फोट होते थे। जब सांसद कहते थे कि आंतकियों पर कार्रवाई करो तो कांग्रेस कहती थी कि आतंकी सीमा के उस पार के हैं। अब दस वर्ष में कहीं आतंकी घटना नहीं हुई, अब कहीं पटाखा भी फट जाता है तो पाकिस्तान पहले सफाई देता है कि मेरा हाथ नहीं है। उसे मालूम है यह नया भारत है, छेड़ता नहीं है यदि कोई छेड़ता है तो छोड़ता नहीं है। यह नया भारत है यहां हाइवे है रेल है और एयरपोर्ट भी है। श्रावस्ती में एयरपोर्ट शुरू हो गया है। बलरामपुर में विश्वविद्यालय भी बन रहा है। हर जिले में मेडिकल कॉलेज हो गया है। सपा सरकार में सड़कों का क्या हाल था, पहले मैं देवीपाटन जाता था तो गोंडा से तीन घंटे लगता था, अब 45 मिनट में पहुंच रहे हैं। गरीब कल्याणकारी योजनाओं की लंबी सूची है। कार्यक्रम में भाजपा प्रत्याशी कीर्तिवर्धन सिंह के साथ ही विधायक राम प्रताप वर्मा, प्रभात वर्मा, रमापति शास्त्री, प्रतीक भूषण सिंह आदि मौजूद रहे।

देश के रक्षा मंत्री ने कहा, पीओके के लोग भारत में चाहतें हैं विलय, अब, देश महाशक्ति बनने की तरफ

संवाददाता–देवरिया। भारत तेजी से विश्व की महाशक्ति बनने की दिशा में अग्रसर है। 2027 तक भारत विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनेगी। कांग्रेस के 52 वर्ष के शासनकाल में भारत की छवि गरीब की थी। उक्त बातें भारत सरकार के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहीं। वे शुक्रवार को देवरिया जनपद के गौरी बाजार स्थित चंद्रशेखर आजाद इंटर कालेज देवगांव के खेल मैदान में देवरिया लोकसभा क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी शशांक मणि त्रिपाठी के समर्थन में चुनावी जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि तीसरी बार सरकार बनने पर 70 वर्ष से ऊपर के प्रत्येक वर्ग के लोगों को 5 लाख रुपये तक की मुफ्त चिकित्सा की सुविधा दी जाएगी। केजरीवाल जनता को भ्रमित कर उनके आंख में धूल झोंक रहें हैं। बड़े विश्वास के साथ उन्होंने कहा कि मोदी ही देश के पीएम होंगें।

सीएम योगी के कराए जा रहे कामों को पूरा देश व विश्व समुदाय भी समझ रहा है। सरकार बनते ही पूरे देश में समान नागरिक संहिता लागू होगा। पीएम मोदी के नेतृत्व में सरकार ने ऐसा कार्य किया कि आज पीओके के लोग स्वयं ही भारत में विलय की मांग कर रहे हैं। भाजपा सरकार बनाने के लिए नहीं देश बनाने के लिए वोट मांग रही है। कांग्रेस देश से विलुप्त होती जा रही है। आने वाले 10 वर्ष बाद लोग कांग्रेस को भूल गए होंगे। हम जनता की आंखों में आंखें डालकर बात करने वाले लोग हैं। विपक्ष के लोग जनता की आंख में धूल झोंकने का काम कर रहें हैं।

कृषक एक्सप्रेस की चपेट में आने से रिटायर्ड सेना जवान की मौत

संवाददाता–देवरिया। कृषक एक्सप्रेस की चपेट में आने से शुक्रवार सुबह सेना के रिटायर्ड जवान की मौत हो गई। हादसा भटनी बाजार से घर जाते समय सिसवा रेलवे क्रासिंग के समीप हुआ। घटना के बाद परिवार में चीख–पुकार मच गई। सूचना पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे में लेकर जांच में जुट गई। हालांकि परिजनों के इंकार के बाद शव का पोस्टमार्टम नही कराया गया। भटनी के जिरासो गांव निवासी शेषनाथ यादव (58) थल सेना से सेवानिवृत्त होकर पुरनाछापर स्थित विद्युत उपकेंद्र पर सुरक्षा गार्ड की ड्यूटी करते थे। शुक्रवार सुबह वह किसी काम से भटनी में आये थे। घर जाते समय वह सिसवा रेलवे क्रासिंग के पास देवरिया की तरफ से आ रही कृषक एक्सप्रेस की चपेट में आ गए। लोगों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से शव का शिनाख्त कराई गई। जानकारी पर मृतक के परिवार में चीख–पुकार मच गईं। मृतक के तीन संतानों में दो बेटे पंकज उर्फ पिंटू यादव यूपी पुलिस में और प्रदीप यादव वायुसेना में कार्यरत हैं। जबकि बेटी की शादी हो गई है। शेषनाथ की पत्नी का निधन दो माह पूर्व हुआ था। सीओ भाटपाररानी शिव प्रताप सिंह ने बताया कि ट्रेन की चपेट में आने से जवान की मौत हुई है। परिजनों के पोस्टमार्टम से इन्कार के बाद शव को सुपुर्द कर दिया गया है।

श्री राम आश्रम में मैथिली परंपरा से मनाई गई जानकी नवमी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

अयोध्या। भगवान श्री राम की जन्मस्थली अयोध्या धाम में माता सीता के प्रति उमड़ा अनुराग, वैशाख शुक्ल पक्ष जानकी नवमी उदया तिथि शुक्रवार को मणिरामदास छावनी, आचार्य पीठ श्री लक्ष्मण किला, सिद्ध पीठ सियाराम किला श्री रामवल्लभा कुंज, जानकी घाट बड़ा स्थान, रामकोट स्थित श्री राम आश्रम सहित अयोध्या के सभी मंदिर में मनाया गया माता सीता का जन्मोत्सव। जनक नंदिनी मां जगदंबा के जन्मोत्सव पर ब्रह्म मुहूर्त से ही मंदिरों में सुबह पंचामृत से अभिषेक कर करके नवीन वस्त्र धारण कराया गया, गर्भगृह सहित मंदिर परिसर को तोरण द्वार से सजा करके बधाई गान प्रारंभ हो गया और जैसे ही घड़ी की सुइयां एक हुई दिन में 12 बजे अयोध्या के सभी मंदिरों में भाई प्रगट कुमारी भूमि बिदारी जनहित कारी .. से गूंज उठा आरती उतारी गई 56 भोग लगाया गया और प्रसाद सभी भक्तों वितरण किया गया।

रामकोट मोहल्ले में स्थित श्री राम आश्रम में पीठ आदिश्वर महंत वेदांती जयराम दास महाराज के संयोजन में मिथिला पद्धति से माता सीता का भव्य जन्मोत्सव मनाया गया। ब्रह्म मुहूर्त में पंचामृत से संगोपन अभिषेक किया गया नवीन वस्त्र धारण कराया गया आरती उतारी की और 56 भोग लगाया, मंदिर परिसर में विराजमान विश्वेश्वर महादेव का भाव अभिषेक किया गया। महंत जयराम दास ने बताया कि वैशाख शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को माता सीता का जन्म मिथिला में हुआ था और हम लोग अयोध्या में मिथिला के पद्धतिसे ही जानकी नवमी पर माता–पिता का जन्मोत्सव मानते हैं शुक्रवार को भव्य जन्मोत्सव मनाया गया प्रसाद वितरण किया गया और जगत कल्याण के लिए विश्वेश्वर महादेव का अभिषेक किया गया।

बनो देश के भाग्य विधाता, अब जागो प्यारे मतदाता

संवाददाता–श्रावस्ती। स्वीप कार्यक्रम के तहत शुक्रवार को कंपोजिट विद्यालय जमुनहा के छात्र–छात्राओं ने मतदाता जागरूकता रैली निकाली। रैली का शुभारंभ ग्राम प्रधान हरिद्वार ने हरी झंडी दिखाकर किया। इस अवसर पर छात्रों ने जमुनहा बाजार एवं बरगदहा के विभिन्न मार्गो से होते हुए विभिन्न फिर से स्कूल परिसर में सम्पन्न हुई। रैली में छात्रों ने अपने हाथों में बैनर ले रखा था। जिसमें स्लोगन जैसे सारे काम छोड़ दो,सबसे पहले वोट दो। अंकल आंटी मान जाओ,वोट डालने की कसम खाओ। छोड़ो अपने सारे काम, पहले चलो करें मतदान। बनो देश के भाग्य विधाता, अब जागो प्यारे मतदाता आदि लिखे थे। इसके बाद मतदाताओं को जागरूक करने के लिए माता समूह एवं माता अभिभावकों ने रंगोली बनाई। रंगोली बहुत आकर्षक रही। रैली में प्रधानाध्यापक आलोक कुमार गुप्त ने छात्रों एवं उपस्थित अभिभावकों को संबोधित करते हुए कहा कि 25 मई को मतदान जरूर करें। एक एक वोट से जनप्रतिनिधि का चुनाव होता है और सरकार बनती है। इस अवसर पर विनोद कुमार शर्मा, इरशाद अहमद, शशिकांत पांडेय, प्रवीन कुमार शुक्ला, सिद्धराम, राधा देवी, अखिलेश कुमार वर्मा,पवन कुमार वर्मा,कृष्णा कुमारी, हरि गोविंद, वेद प्रकाश सैनी सहित अनेकों अभिभावक मौजूद रहे।

श्री राम नगरी को साधने में जुटे सभी दल

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

अयोध्या। देश लोकसभा चुनाव के रंग में पूरी तरह रग गया है और वर्तमान समय में राजनीति का केंद्र बने हुए हैं प्रभु श्री राम और उनकी जन्मस्थली अयोध्या में फैजाबाद लोकसभा सीट पर चुनाव पांचवें चरण में है सभी पार्टियों ने अपनी ताकत अयोध्या सीट जीतने के लिए लगा दी है कुछ दिन पूर्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अयोध्या में रोड शो करके यहां की जनता को साधने की कोशिश की तो वहीं इंडिया गठबंधन में शामिल समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव ने अयोध्या को सौहार्द की नगरी बनाने की बात कही ऐसे में मां सरयू के पावन तट पर विराजमान करतलिया आश्रम के पीठाधीश्वर महंत बाल योगी रामदास महाराज भी चुनाव में जनसभा के दौरान समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव से मिले जीत की शुभकामना दी और बताया कि अखिलेश यादव बड़े ही सरल हृदय के हैं हिंदू धर्म में आस्था रखते हैं लेकिन उसका प्रचार प्रसार नहीं करते। उन्होंने बताया अयोध्या के विकास की शुरुआत समाजवादी सरकार में ही हुआ था अंडरग्राउंड विद्युतीकरण पूरे शहर में सीवर लाइन समाजवादी सरकार की ही देन है। उन्होंने कहा कि भगवान श्री राम सबके हैं और सभी लोग उनमें आस्था रखते हैं यही कारण है कि समाजवादी पार्टी राम को राजनीति से दूर रखतीं हैं और अयोध्या को सौहार्द की नगरी के रूप में विकसित करना चाहिए है क्योंकि हमारे आराध्य प्रभुश्री राम भी श्री राम राज्य की स्थापना सबको लेकर के की थी और वर्तमान समय में इस राम राज्य की स्थापना की आवश्यकता है और यहां कार्य वही कर सकता है जो सभी को साथ लेकर के चने की क्षमता रखता हो। समाजवादी लोग हमेशा सबके साथ एक दृष्टि से कार्य करते हैं और वर्तमान समय में मतदाता शांत है कुछ भी हो सकता है। उन्होंने बताया राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के अयोध्या चुनावी सभा में हमारे साथ दर्जनों संत वहां पहुंचे और विजय का आशीर्वाद दिया।

ऊर्जा मंत्री ने किया बृजभूषण का गुणगान

संवाददाता–गोण्डा। नगर के रामलीला मैदान में शुक्रवार को आयोजित चुनावी जनसभा में बतौर मुख्य अतिथि ऊर्जा व नगर विकास मंत्री एके शर्मा ने कार्यकर्ताओं में जोश भरा। उन्होंने कैसरगंज से पार्टी उम्मीदवार करणभूषण सिंह को विजयी बनाने की अपील की। कैबिनेट मंत्री एके शर्मा ने अपने संबोधन में सांसद के कार्यकाल की सराहना करते हुए कहा कि हम लोग भी इनसे सीखते है। उनकी बात को नीचे से लेकर प्रधानमंत्री तक कोई नहीं काटता है। उन्होंने कहा कि जब भाजपा सरकार ने शुरुआत की है तो सब देने की बात कह रहे है। करनैलगंज के विकास के लिए सात करोड़ व कटरा को तीन करोड़ 70 लाख दिये गये है। शर्मा ने कहा कि केवल सांसद ही ऐसे है जो परिवार व जातिवाद से परे हटकर कार्य कर रहे हैं। सांसद बृजभूषण शरण सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि अब आपको डबल मदद मिलेगी। जहां करण भूषण सिंह आपकी समस्याओं के लिये दिल्ली में आवाज उठायेगा, तो वहीं यहां मै आपके भाई के रूप में दुख व सुख में हमेशा खड़ा मिलूंगा। उन्होंने कहा कि आज मेरी बातों का गलत मतलब निकाल लिया जाता है। कुछ लोग पांच सौ किलोमीटर दूर बैठ कर मेरी राजनीतिक हत्या करना चाहते है। 1996 में कुछ लोगों ने मेरा अनभला चाहा था तब मेरी पत्नी सांसद बनी थी अब 2024 में फिर वही कहानी दोहराई जा रही है। जिला पंचायत अध्यक्ष घनश्याम मिश्रा, करनैलगंज विधायक अजय कुमार सिंह, कटरा विधायक बावन सिंह, लोकसभा संयोजक अकबाल बहादुर तिवारी, रामजी लाल मोदनवाल, वासुदेव सिंह, मंहत हेमंतदास ने भी जनसभा को संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन विद्याभूषण द्विवेदी ने किया।

पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद का जैन मंदिर में हुआ भव्य स्वागत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

अयोध्या। भगवान श्री राम की जन्मस्थली अयोध्या दिगंबर जैन मंदिर रायगंज पहुंचे पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद हुआ भव्य स्वागत दो दिवसीय प्रवास पर अयोध्या रहेंगे पूर्व राष्ट्रपति हनुमान जी महाराज का दर्शन पूजन मां सरयू की आरती श्री रामलला के साथ ऋषभ देव भगवान का दर्शन पूजन करेंगे और 18 में को दिन में 9.30 जैन साध्वी ज्ञानमती माताजी से आध्यात्मिक चर्चा। वंदे भारत ट्रेन से पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद और उनके परिवार के साथ 80 लोगों का डेलिगेशन धार्मिक यात्रा के लिए अयोध्या कैंट रेलवे स्टेशन पहुंचा वहां पर उनका स्वागत हुआ और वह जैन मंदिर पहुंचे लगभग 2 घंटे आराम करने के बाद पूरे परिवार के साथ मां सरयू के तट पर पहुंचे जहां दर्शन पूजन के साथ अभिषेक किया आरती उतारी और हनुमान जी के दरबार पहुंचकर हनुमान जी महाराज का दर्शन पूजन किया।

मां सरयू की नित्य आरती करने वाली संस्था आंजनेय सेवा संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष महंत शशिकांत दास ने अपनी टीम के साथ पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद और उनके परिवार का अभिषेक और आरती कारण। दर्शन पूजन के उपरांत पूर्व राष्ट्रपति जैन मंदिर में ही रात्रि विश्राम करेंगे सुबह 5.30 बजे श्री राम लाल का दर्शन पूजन करेंगे मंदिर का निरीक्षण करेंगे मंदिर परिसर में श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट उनका स्वागत सम्मान करेगा। विजय कुमार जैन ने बताया कि पूर्व राष्ट्रपति की यह पूर्ण रूप से धार्मिक यात्रा है जिसमें उनकी पत्नी श्रीमती सविता कोविन्द, सुपुत्री स्वाति कोविन्द पुत्र रिश्तेदार और मित्रगण सम्मिलित है। उनके स्वागत में जैन मंदिर के अध्यक्ष व पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी एवं कमेटी के समस्त पदाधिकारी सम्मिलित होंगे। समस्त कार्यक्रम में प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का मार्गदर्शन एवं सान्निध्य प्राप्त होगा।

नहर के किनारे मिला अधेड़ का शव

संवाददाता–महराजगंज। क्षेत्र के मैनहवा के एक अधेड़ व्यक्ति का शव नहर के किनारे मिला हैं।जानकारी के अनुसार मैनहवा निवासी मकालू गुरुवार को घर से निकला था। देर रात तक घर नहीं लौटा तो परिजन उसकी तलाश में जुट गए। काफी खोजबीन के बाद भी उसका कहीं पता नहीं चल सका। उसका मोबाइल भी बंद बताने लगा। शुक्रवार की सुबह हरैया पंडित गांव के सिवान में नहर के किनारे एक शव देखकर लोगों ने पुलिस को सूचना दी। कुछ ही देर में मृतक की पहचान हो गई। परिजन शव देखने के बाद दहाड़ मारकर रोने लगे। पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम से मौत की पुष्टि हो सकेगी। मकालू का बदन नीला पड़ने से जहर से उसकी मौत होने की आशंका जताई गई है।

अंग्रेज चले गए लेकिन कांग्रेस को छोड़ गए –मोहन यादव

संवाददाता–बलरामपुर। भगवान राम की जन्मभूमि के लिए सदियों तक संघर्ष हुआ। आजादी के बाद राम लला को अपने मंदिर में आने के लिए 70 साल इंतजार करना पड़ा। कांग्रेस ने हमेशा हिंदू जनमानस की भावनाओं पर कुठाराघात करने का काम किया है। यही कारण है कि हमारे यहां पाठ्यक्रमों से राम और कृष्ण जैसे आदर्श को हटा दिया गया था।

प्रधानमंत्री ने नई शिक्षा नीति लागू कर राम कृष्ण को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने का काम किया है। देश से अंग्रेज तो चले गए लेकिन अपने प्रतिनिधि के रूप में कांग्रेस को छोड़ गए। यह बातें मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डा.मोहन यादव ने कही। मध्य प्रदेश के सीएम डा. मोहन यादव शुक्रवार को गैसड़ी विधानसभा के लोकमान्य तिलक इंटर कॉलेज पचपेड़वा के मैदान में आयोजित जनसभा को संबोधित कर रहे थे।

स्वतंत्रदेव ने किया योजनाओं का बखान, कमल खिलाने की अपील

संवाददाता–गोण्डा। तरबगंज विधायक आवास पर आयोजित भाजपा के कार्यकर्ता सम्मेलन में मुख्य अतिथि जल संसाधन मंत्री स्वतंत्र देव सिंह ने महत्वाकांक्षी योजनाओं का बखान किया। कहा कि मोदी सरकार बनने के बाद कश्मीर के लाल चौक में तिरंगा भी लहराता है। दिल्ली की देन है कि अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण हो गया। भाजपा जो कहती है वो करती है। उन्होंने 20 मई को करन भूषण शरण सिंह के पक्ष में मतदान की अपील की। इससे पहले विधायक प्रेम नरायन पांडेय, ब्लॉक प्रमुख मनोज पांडेय, जिपं सदस्य विनोद पांडेय व रामधोख मिश्र ने माल्यार्पण और प्रतीक चिन्ह के रूप में हनुमानजी की प्रतिमा देकर उनका स्वागत किया। अपने संबोधन ने सांसद बृजभूषण शरण सिंह ने कहा की वह बेटे करन भूषण शरण सिंह सांसद बनने के लिए आशीर्वाद मांग रहे हैं। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधान परिषद सदस्य अवधेश कुमार सिंह उर्फ मंजू सिंह ने संबोधित करते हुए कहा कि नेताजी न केवल एक सफल राजनीतिक रहे हैं, बल्कि पूरे पूर्वांचल में नेताओं की नर्सरी खड़ी करने में भी उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। कार्यक्रम का संचालन विधानसभा संयोजक अजय सिंह ने किया। सभा को संजय खौराती, केके श्रीवास्तव, अनुपम मिश्रा, पुनीत सिंह, ब्लॉक प्रमुख गुड्डू सिंह ने भी संबोधित किया।

अदालती नोटिस

न्यायालय– श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) सदर महोदय फैजाबाद के द्वारा निकाली गयी उद्घोषणा अर्न्तगत धारा 372 उत्तराधिकार अधि0

M.N.R.N0. 51/2024

उमेश आदि

बनाम

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कलेक्टर महोदय फैजाबाद हर खासो आम

मृतक–राम गोपाल पुत्र झिंगुर निवासी वार्ड नं. 10 तेलियागढ गोसाईंगंज परगना–अमसिन तहसील सदर जिला – अयोध्या

मृत्यु दिनांक–11/05/2001

पेशी दिनांक– 04–07–2024

अपने मृतक को देय ऋण औरं प्रतिभूतियों को वसूल करने के लिये उत्तराधिकार प्रमाण पत्र की अभिप्राप्ति के लिये प्रार्थना–पत्र के अर्न्तगत धारा 372 अधिनियम संख्या 39 सन 1925 ई0।

चूंकि श्री निवासी ग्राम परगना तहसील जिला ने उत्तराधिकार प्रमाण–पत्र की अभिप्राप्ति के लिये आवेदन किया और 2024 के माह 07 के 04 दिवस का आवेदन की सुनवाई के लिये तिथि निश्चित की गयी है।

अतः यह उद्घोषणा निकाली जाती है कि जिस किसी को उपरोक्त आवेदन के सम्बन्ध में कोई आपत्ति हो वह स्वयं अथवा अधिवक्ता द्वारा न्यायालय सिविल जज जू0डि0 सदर फैजाबाद के न्यायालय में दिनांक 04–07–2024 को अपरान्ह 10 बजे उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रस्तुत करे अन्यथा उक्त तिथि के अवसान पर किसी की कोई आपत्ति नहीं सुनी जायेगी और प्रार्थना पत्र पर यथोचित आदेश पारित कर दिया जायेगा।

आज दिनांक माह सन ई0 को मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय–श्रीमान मुख्य राजस्व अधिकारी महोदय अयोध्या

वाद सं.

सत्य प्रकाश सिंह आदि

बनाम

सुरेश सिंह आदि

बनाम–1– तारा देवी पत्नी स्वर्गीय भवानी प्रसाद 2– शम्भूनाथ 3– शेषनाथ 4– देवेन्द्रनाथ पुत्रगण स्वर्गीय भवानी प्रसाद निवासी ग्राम– रामनगर धौरहरा परगना मगलसी तहसील सोहावल जनपद– अयोध्या

तारीख पेशी 18–05–2024

चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2024 के माह 05 के 18 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 24 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) सदर महोदय फैजाबाद

मूल वाद सं. 1300/2023

रामधीरज

बनाम

जियाराम आदि

बनाम–1– जियाराम पुत्र हरीराम 2– शिव प्रसाद 3– कामता प्रसाद पुत्रगण राजकिशोर 4– अम्बिका प्रसाद पुत्र देवता प्रसाद 5– श्रीमती अनारा पत्नी सन्तसरन 6– श्रीमती सुनीता देवी पत्नी रामधीरज समस्त निवासीगण ग्राम– ददेरा परगना हवेली अवध तहसील सदर जनपद– अयोध्या

तारीख पेशी 26–05–2024

चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2024 के माह 05 के 26 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 24 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) सदर महोदय फैजाबाद

मूल वाद सं. 687/2022

जयराम

बनाम

दूधनाथ

बनाम–1– दूधनाथ पुत्र राम प्रसाद निवासी रामपुर हलवारा परगना हवेली अवध तहसील सदर जनपद– अयोध्या

तारीख पेशी 31–07–2024

चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2024 के माह 07 के 31 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 24 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) सदर महोदय फैजाबाद

मूल वाद सं. 859/2021

गुलाम असगर आदि

बनाम

बादशाह हुसैन आदि

बनाम–1– मुख्तार अली 2– अफजल अली पुत्रगण हामिद हुसैन 3– शब्बरी फातिमा पत्नी सैय्यद मोहम्मद दद्दन 4– सैय्यद शमशुल हसन 5– सै0 शमशुल हसन 6– सै0 अनरूल हसन पुत्रगण सै0 मोहम्मद बच्छन निवासी गण ग्राम– सरहदा परगना हवेली अवध तहसील सदर जनपद– अयोध्या

तारीख पेशी 04–07–2024

चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2024 के माह 07 के 04 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 24 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) सदर महोदय फैजाबाद

मूल वाद सं. 636/2021

रामनाथ

बनाम

मिथिलेश खरे आदि

बनाम–1–मिथिलेश खरे पुत्र स्वर्गीय सुभाष चन्द्र खरे निवासी मोहल्ला कैथाना नया पुरवा पोस्ट–टेढी बाजार जनपद– अयोध्या

तारीख पेशी 13–07–2024

चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2024 के माह 07 के 13 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 24 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

(हेतु सन्दर्शित करने की सूचना साधारण प्रारूप)

न्यायालय–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) सदर महोदय फैजाबाद

मूल वाद सं. 1086/2023

बलिराम

बनाम

प्रदीप कुमार आदि

बनाम–1–प्रदीप 2– शोमनाथ पुत्रगण जग प्रसाद 3– रामनाथ पुत्र हौसिला 4– दिलीप कुमार पुत्र जग प्रसाद 5– रवि कुमार पुत्र देवनाथ 6– श्रीमती अनारा देवी पत्नी देवनाथ 7– दयाराम पुत्र देवनाथ समस्त निवासीगण ग्राम– उधरपुर परगना हवेली अवध तहसील सदर जनपद– अयोध्या

तारीख पेशी 20–07–2024

चूंकि उपरिनामांकित ने इस न्यायालय में आवेदन किया है कि अतएवं आपके एतद द्वारा चेतावनी दी जाती है कि आप इसे आदेश के खिलाफ हेतु सन्दर्भित करने के लिये 2024 के माह 07 के 20 दिवस को 10.00 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या सम्पर्क रूपेण अनुर्दिष्ट अपने अधिवक्ता द्वारा उपस्थित हो और ऐसा न करने पर उक्त आवेदन एक पक्षीय रूप से सुना जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय की मुद्रा सहित आज सन 24 के माह के दिवस को निकाली गयी।

द0 हाकिम

अयोध्या में बोले सीएम योगी- जब भी कांग्रेस और सपा मिलते हैं तो अपशकुन होता है

संवाददाता–अयोध्या। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मिल्कीपुर विधानसभा क्षेत्र के अमानीगंज के निकट आयोजित जनसभा में भाजपा उम्मीदवार व सांसद लल्लू सिंह को रामभक्त बताते हुए जनसभा की शुरुआत में ही रामद्रोहियों कि जमानतें जब्त कराने की अपील की। सीएम योगी लोक परलोक को सुधारने के लिए वोट कमल पर देने की अपील कर गए।

रामभक्तों पर गोलियां समाजवादी पार्टी ने चलाई। रामभक्तों का संरक्षण होता है और माफियाओं की अंतिम यात्रा रामनाम सत्य के साथ धूमधाम से निकाल दी जाती है। सबसे बड़ा रामभक्त भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को बताते हुए योगी ने पूछा कि सपा व कांग्रेस की सरकार रहते हुए क्या राममन्दिर बन पाता। पूछा कितने लोगों ने दर्शन किया। ये पीढ़ी सौभाग्यशाली है। यहां जन्म लेना और भी सौभाग्यशाली है। माफिया की भूमि नहीं महोत्सव की भूमि होगी। सपा पर हमला करते हुए कहा कि जन्मभूमि पर आतंकी हमला करने वालों का मुकदमा वापस लेने का काम अखिलेश यादव ने किया। मोदी व योगी को ताकत आपका कमल के फूल पर जाने वाला वोट देता है। आपके वोट से अयोध्या में राममंदिर का निर्माण हो गया। परलोक में पूर्वजों को भी बता सकेंगे। मोदी ने भारत का कायाकल्प किया। दुनिया का सुरक्षित देश बनाया है।

हर घर नल जल की योजना दिखाई पड़ रही है। सपा व कांग्रेस के समय राशन माफिया हावी थे। देश में 80 करोड़ लोग मुफ्त राशन पा रहे है। सरकार आपकीं है उपचार का खर्चा हम उठाएंगे। गांवों में स्वच्छता है, हर घर में शौचालय है। सीएम ने कहा कि 10 करोड़ परिवार को गैस कनेक्शन मिला। चार करोड़ घर बन गए है। जितने बचे है अगले तीन वर्ष के अंदर पूरे हो जाएंगे। सपा, कांग्रेस व बसपा पर निशाना साधते हुए योगी ने तीनों को वोट कटवा बताया। बोले कि सपा कांग्रेस जब मिलते है तो अपशगुन जरूर होता है, अब फिर मिले है। गरीबी हटाओ का माडल खतरनाक है। सपा–कांग्रेस को खून चुसवा का संस्करण बताया। लल्लू सिंह का जीवन राम मंदिर के लिए समर्पित है। रुदौली विधायक रामचन्द्र यादव, लगातार चुनाव जीत रहे है, नाम ही रामचंद्र है। मिल्कीपुर के विधायक रहे गोरखनाथ बाबा पासी जाति का है।

जेसीबी से हो रही थी चकरोड की पटाई, ग्रामीणों ने रोका

संवाददाता–संतकबीरनगर। जिले के विकास खंड सेमरियावां के भेलवासी, बूधा से होकर गुजरे चकरोड की पटाई देखकर ग्रामीण भड़क गए। ग्रामीणों का आरोप है कि उनके खेतों में घुस कर जबरिया मिट्टी की पटाई की जा रही है। ग्रामीणों ने विरोध जता कर कार्य रोकवा दिया। ग्रामीणों ने कलक्ट्रेट पहुंच कर डीएम को शिकायती पत्र दिया। भेलवासी व बूधा गांव निवासी गनेश, रामभवन, विश्वनाथ, रंगीलाल, निशा, सुभावती, धर्मराज, संतराम, खोटई, अतवारी, शकुंतला, राम भवन, देवेंद्र, दीपक कुमार, राधेश्याम, अखिलेश, पंकज आदि कलक्ट्रेट पहुंचे। ग्रामीणों ने डीएम को शिकायती पत्र दिया। ग्रामीणों ने कहा कि भेलवासी और बूधा के बीच से होकर चकरोड डबरा पुरवा को जाता है। जिस पर काफी पहले से खड़ंजा लगा हुआ है। आरोप है कि बाहर के कुछ लोग चार जेसीबी से लेकर आए और उनके खेत से होकर जाने वाले चकमार्ग के दोनों तरफ करीब 15–15 फीट चौड़ा पटाई करने लगे। बाद में कुछ ग्रामीण मौके पर पहुंच गए और पूछताछ करने लगे तो उक्त लोगों ने बताया कि यह रिंग रोड स्वीकृत है। जबकि कागज में आठ फीट चौड़ा ही चकमार्ग है। आरोप है कि लोग दबंगई से खोदाई कर रहे थे। जब गांव के काफी संख्या में लोग जुट गए, तब ये लोग जेसीबी लेकर वहां से भागे। इनके ऐसे कृत्य से कोई भी अप्रिय घटना घट सकती है। ग्रामीणों ने डीएम से मांग किया कि सक्षम अधिकारी को मौके पर भेजकर जांच कराई जाए। जबरदस्ती खोदाई कर रहे लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जाए। डीएम ने ग्रामीणों के साथ अन्याय नहीं होने देने का भरोसा दिया।

केजरीवाल फिर जाएंगे जेल –पंकज चौधरी

संवाददाता–संतकबीरनगर। शुक्रवार को केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने मनियरा स्थित एक रिजार्ट में आयोजित बैठक में कांग्रेस सहित समूचे विपक्ष पर हमलावर बोला। चौधरी ने कहा कि चुनाव बाद केजरीवाल फिर जेल जाएंगे। न्यायालय ने बेल दिया है आरोपों से बरी नहीं किया है। उन्होंने कहा कि दस साल पूर्व की जो सरकार थी उसके शासन काल में हर महीने एक घोटला उजागर हो रहा था। भाजपा के शासनकाल में बीते दस साल में एक भी घोटाला नहीं हुआ है। यही बात विरोधियों को परेशान कर रही है।

चौधरी ने कहा कि देश की पंचायत में 85 सांसद पिछड़ी जाति से आते हैं। 27 पिछड़ी जाति के मंत्री है। देश के प्रधानमंत्री भी पिछड़ी जाति से आते हैं। पिछड़ों को एकजुट होने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि बाबा साहेब ने संविधान में साफ लिखा है कि धर्म के आधार पर आरक्षण नहीं दिया जाना चाहिए। कांग्रेस शासित एक राज्य में एसी–एसटी, ओबीसी के आरक्षण में कटौती कर एक संप्रदाय को आरक्षण दिया है। समूची कांग्रेस एक संप्रदाय के वोट बैंक के लिए काम कर रही है। राहुल गांधी भी चाइना से पूरी तरह से प्रभावित हैं। उन्होंने कहा कि जब किसी घोटालेबाज पर सीबीआई शिकंजा कसती है तो समूचा विपक्ष यही कहता है कि सरकार ने सीबीआई छोड़ दिया है। सीबीआई पहले से है। जिस प्रकार से पहले काम कर रही थी उसी प्रकार से अब भी काम कर रही है। उन्होंने सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को गिनाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व विधायक दिग्विजय नारायण चतुर्वेदी उर्फ जय चौबे ने की। इस मौके पर मेंहदावल विधायक अनिल तिवारी, हैंसर विधायक गणेश चौहान, खजनी विधायक गणेश चौहान ने भी सभा को संबोधित किया।

केंन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री ने सपा को भी आड़े हाथ लिया। कहा कि सत्ता में आने के बाद सरकार कोई और चलाता है। पूर्व की सरकारों में इसका नजारा साफ दिखा था। सत्ता में आने के बाद प्रदेश अध्यक्ष बदल जाता है। यह किसी से छिपा नहीं है। प्रदेश अध्यक्ष और जिलाध्यक्ष तक बदल जाते हैं। जाति धर्म की राजनीति करने वालों को जनता अब नकार रही है।

देश को विश्व गुरू बनाने के लिए करें मतदान –कृष्णनं दास

संवाददाता–अम्बेडकरनगर। विश्व हिंदू परिषद भी लोकतन्त्र के इस महापर्व में शत प्रतिशत मतदान के लिए जुट गई है। टोली सन्तो के नेतृत्व में गोष्ठी का आयोजन कर गांव–गांव जनजागरण कर रही है।

अभियान को गति देने के लिए प्रान्त सत्संग प्रमुख श्याम बाबू सन्तो की टोली के साथ टाण्डा विधानसभा स्थित श्रीझारखंड महादेव मंदिर में सिधेश्वर धाम के महंत कृष्णनं दास, कमला पंडित के समाधि मंदिर के पूज्य महंत राम नयन दास एवं हनुमान मंदिर के महंत श्याम सुंदर दास से मुलाकात कर आशीर्वाद मांगा। कृष्णनं दास ने कहा कि हमारे पुरखों ने भारत माता को फिर से विश्व गुरु के पद पर देखने के लिए अपने प्राणों की आहुतियां दी थीं आज वह सपना साकार होते हुए दिख रहा है। हम सब अपने मतदान का प्रयोग कर उसे और बल दें ताकि अधूरे कार्य को भी पूरा किया जा सके। श्याम बाबू ने कहा आगामी 25 मई को भी हमारे पास प्रतिदिन की तरह तमाम कार्य रहेंगे पर हम सबको संविधान द्वारा मिले मताधिकार का उपयोग कर देश निर्माण में अपनी महती भूमिका निभानी होगी। मातृ शक्ति की जिला संयोजिका शोभना गुप्ता ने कहा यह महापर्व पांच वर्ष में एक बार आता है और हम सबको इस महत्वपूर्ण दिन को ऐसे ही नही बिता देना है। कहा कि यह दिन हम सबके लिए अति महत्वपूर्ण है क्योंकि यही माध्यम है कि अपने पूर्वजों के अधूरे सपने को पूरा करके भविष्य को सुरक्षित बनाया जा सके। कार्यक्रम में मुश्कान विश्वकर्मा, बबिता चौरसिया, रचना, पुष्पा गुप्ता, मिश्लावती मौर्य, सोनल सिंह, कुसुम लता, विजय लक्ष्मी, शकुंतला, मंजूलता, रंजना, अरुण अग्रवाल, मन्तराम यादव, उमंग, किरन सोनी, श्रीप्रकाश सिंह, जयपाल मौर्य, कृष्णा, बाबा अरुण दास, आकाश गुप्ता, जिला संयोजक आलोक चौरसिया, ओम प्रकाश साहू, राजेश जायसवाल व अन्य मौजूद रहे।

अदालती नोटिस

सम्मन बरगज इनफिसाल मुकदमा
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5 मजमुआ जाप्ता 200 ई0)
वाद सं0
अदालत– श्रीमान नायब तहसीलदार महोदय कुदरहा जिला बस्ती
दर्शनादेई
बनाम
भगौती
1. ममता चौधरी 2. रेनू चौधरी 3. पूनम चौधरी 4. पुष्पा चौधरी पुत्रीगण रमाकान्त 5. आदर्श चौधरी पुत्र अशोक कुमार 6. रितिका चौधरी पुत्री अशोक कुमार निवासीगण ग्राम सिकरा बरगाह तप्पा कपरी महसो परगना महुली पश्चिम तहसील व जिला–बस्ती

तारीख पेशी 20–05–2024

वाजेह हो कि ने आपके नाम एक नालिस बाबत दायर की है। लिहाजा आपको हुक्म होता है कि आप बतारीख 20 माह 05 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन बमुकाम असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमे के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके हाजिरी के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तदलाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

खलीलाबाद–बहराइच रेल मार्ग के सर्वे पर ब्रेक, मुआवजे

संवाददाता–संतकबीरनगर। जिले में खलीलाबाद से बहराइच तक नई रेल लाइन बिछाई जानी प्रस्तावित है। अभी तक प्रशासन भूमि अधिग्रहण में ही अटका हुआ है। परिसंपत्तियों के मूल्यांकन में देरी हो रही है। किसानों की संख्या तक का निर्धारण नहीं हो पाया है। इधर लेखपालों की ड्यूटी चुनाव में लगा दी गई हैं। जिसकी वजह से सर्वे पर ब्रेक लग गया है। ऐसे में किसानों को मुआवजे के लिए अभी और इंतजार करना पड़ेगा। जबकि प्रथम चरण में खलीलाबाद से बांसी तक 54 किलोमीटर दूरी तक रेल लाइन बिछाई जानी है। इस काम को वर्ष 2024 में पूरा करने का लक्ष्य था। पर अभी तक अधिग्रहण का काम पूरा नहीं हुआ तो रेल लाइन बिछाने की बात तो दूर की है। खलीलाबाद से बांसी, बलरामपुर, श्रावस्ती से होकर बहराइच तक नई रेल लाइन बिछाने की मंजूरी वर्ष 2017 में मिली थी। खलीलाबाद से बहराइच तक करीब 240 किलोमीटर दूरी तक नई रेल लाइन बिछाई जानी है। इसमें संतकबीरनगर के 54, सिद्धार्थनगर के 93, बलरामपुर के 65, श्रावस्ती के 30 और बहराइच के 19 गांवों से होकर नई रेल लाइन जानी है। इसके लिए सिद्धार्थनगर और संतकबीरनगर में भूमि अधिग्रहण की प्रकिया चल रही है। जबकि बलरामपुर, श्रावस्ती और बहराइच में अभी सर्वे हो रहा है।

प्रथम चरण में खलीलाबाद से बांसी तक 54 किलोमीटर दूरी तक रेल लाइन बिछाई जानी है। इसमें संतकबीरनगर जिले के खलीलाबाद तहसील के 29 गांवों के किसानों की 75.128 हेक्टेयर जमीन और मेंहदावल तहसील के 25 गांवों की 66.862 हेक्टेयर जमीन अधिग्रहीत की जानी है। इस प्रकार कुल 54 गांवों की 142 हेक्टेयर जमीन ली जानी प्रस्तावित हैं। प्रशासन की ओर से लेखपालों की टीम लगाकर किसानों की जमीन का सर्वे कराया जा रहा था। खलीलाबाद तहसील के 18 गांवों और मेंहदावल तहसील के नौ गांवों का सर्वे कार्य पूर्ण हो चुका है। रेलवे लाइन के सर्वे का कार्य पूरा करने की जिम्मेदारी लेखपालों को दी गई थी। लेकिन चुनाव की घोषणा होने के बाद सारे कार्य ठप कर लेखपालों की ड्यूटी चुनाव में लगा दी गई है। जिसकी वजह से सर्वे का कार्य बंद हो गया है। अब चुनाव के बाद फिर सर्वे कायर शुरू होगा। कार्य लेट होने की वजह से किसानों को मुआवजा के लिए अभी और इंतजार करना पड़ेगा।

टीबी की दवा का संकट, मरीजों की मुसीबत

संवाददाता–संतकबीरनगर। जले में टीबी के मरीजों को दवा के लिए परेशान होना पड़ रहा है। इन दिनों टीबी अस्पताल में इस रोग की दवा एक सप्ताह के लिए उपलब्ध है। हर दिन दो दर्जन से अधिक मरीज दवा के लिए अस्पताल में परेशान हो रहे हैं। इस मामले की जानकारी होने पर सीएमओ ने सभी प्रभारी चिकित्सा अधिकारियों के साथ बैठक कर दवाओं की खरीदारी करने के निर्देश दिए हैं। जनपद में इन दिनों 1932 टीबी के मरीज सक्रिय हैं। इन मरीजों को सरकार के तरफ से मुफ्त में टीबी अस्पताल से दवा दी जाती है। लेकिन जो मरीज इन दिनों दवा लेने के लिए अस्पताल में आ रहे हैं उन्हे दो से तीन दिन की ही दवा मिल पा रही है। इस बात की जानकारी जब सीएमओ डा. रामानुज कनौजिया को हुई तो उन्होंने जनपद के सभी प्रभारी चिकित्साधिकारियों के साथ बैठक की। उन्होंने सभी को निर्देशित किया कि आरकेएस मद से टीबी की दवा खरीदी जाएगी। इससे मरीजों को राहत मिलेगी। जिला क्षय रोग अधिकारी डा. एसडी ओझा ने बताया कि पूर्व में भी दवा के संकट होने के बारे में पहले से जानकारी हो गई थी। जिसकी हम लोगों ने अन्य जनपदों से व्यवस्था कर ली थी। लेकिन अब सरकारी सप्लाई ही बहुत कम हो रही है। ऐसे में प्राइवेट दुकानों से इस दवा की खरीदारी करनी पड़ेगी। जिस मशीन से टीबी की जांच की जाती है वह मशीन खराब हो गई है।

पश्चिम बंगाल के साइबर ठग का जमानत प्रार्थना पत्र निरस्त

संवाददाता–संतकबीरनगर। जिले के सेवानिवृत्त पुलिस कर्मी के खाते से साइबर ठगी करके रुपया हड़पने के आरोपी का जमानत प्रार्थना पत्र जनपद एवं सत्र न्यायाधीश अनिल कुमार वर्मा प्रथम की कोर्ट ने निरस्त कर दिया। आरोपी उत्तर 24 परगना पश्चिम बंगाल का रहने वाला है। आरोपी राजू साव पर साइबर ठगी के माध्यम जालसाजी करके सेवानिवृत्त पुलिस कर्मी के खाते से 24 लाख 40 हजार रुपए निकाल कर हड़प लेने का आरोप लगाया गया है। जिला शासकीय अधिवक्ता फौजदारी विशाल श्रीवास्तव ने बताया कि प्रकरण में जिले के बेलहर कला थाना क्षेत्र के ग्राम औरहिया मंझरिया निवासी विद्यासागर ने अभियोग पंजीकृत कराया है। वादी का आरोप है कि वह पुलिस विभाग में चालक के पद से सेवानिवृत हुआ है। सेवानिवृत्ति से मिलने वाली धनराशि 38 लाख 63 हजार 378 रुपए उनके बैंक खाते में जमा थी। बैंक खाते से एटीएम कार्ड भी संचालित किया जाता था। दिनांक 18 मार्च 2021 को साइबर ठगों ने धोखाधड़ी करके उनके खाते से 24 लाख 40 हजार रुपए रुपए निकाल कर दूसरे के खाते में डाल दिया। ठगों द्वारा बैंक से साइबर ठगी करके रुपया हड़प लेने से उनके जीवन भर की पूंजी समाप्त हो गई। थाना बेलहर कला में अभियोग पंजीकृत हुआ। विवेचना के दौरान आरोपी राजू साव पुत्र कैलाश साव निवासी रोड नैहाटी थाना नैहाटी जिला उत्तर 24 परगना पश्चिम बंगाल का नाम प्रकाश में आया। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार करके न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया। आरोपी राजू साव के जमानत प्रार्थना पत्र का जिला शासकीय अधिवक्ता फौजदारी विशाल श्रीवास्तव ने विरोध किया। सुनवाई के पश्चात जनपद एवं सत्र न्यायाधीश अनिल कुमार वर्मा प्रथम की कोर्ट ने आरोपी राजू साव का जमानत प्रार्थना पत्र निरस्त कर दिया।

एंटीबायोटिक्स के क्षेत्र में नवाचार का साधन है माइक्रोबियल इंजीनियरिंग

संवाददाता–गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में माइक्रोबियल इंजीनियरिंग ऑफ एंटी बायोटिक बायोसाइंथेसिस पाथवे विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता सिद्धार्थ विश्वविद्यालय सिद्धार्थनगर के सहायक आचार्य डॉ. कपिल गुप्ता ने कहा कि माइक्रोबियल इंजीनियरिंग जीवाणुओं का उपयोग करके विभिन्न उत्पादों की उत्पत्ति और उनके सुधार करने का काम करता है। इसका एक प्रमुख क्षेत्र एंटीबायोटिक उत्पादन है। डॉ. गुप्ता ने कहा कि माइक्रोबियल इंजीनियरिंग से एंटीबायोटिक्स के क्षेत्र में नवाचार के साथ ही इसके उत्पादन के औद्योगिक स्तर में वृद्धि की जा सकती है। उन्होंने बताया कि माइक्रोबियल इंजीनियरिंग द्वारा एंटीबायोटिक उत्पादन की क्षमता को संशोधित करने के लिए सूक्ष्म जीवों की आनुवंशिक संरचना में बदलाव करने और प्रमुख एंजाइम की क्लोनिंग का काम भी किया जा सकता है। व्याख्यान में प्रमुख रूप से बॉयोटेक्नोलॉजी विभाग के अध्यक्ष डॉ. अमित कुमार दूबे, बायोकेमिस्ट्री विभाग की अध्यक्ष डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. अवेद्यनाथ, डॉ. पवन कुमार कन्नौजिया, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, धनंजय पांडेय, डॉ. संदीप श्रीवास्तव, डॉ. केके यादव, डॉ. प्रेरणा, डॉ. अंकिता मिश्रा, अनिल मिश्रा उपस्थित रहे।

पश्चिम और मध्य यूपी की फोर्स गोरखपुर में कराएगी चुनाव

संवाददाता–गोरखपुर। जिले में अर्द्धसैनिक बलों के अलावा पश्चिम और मध्य यूपी की पुलिस फोर्स इस बार चुनाव कराएगी। सातवें चरण की चुनावी ड्यूटी लगाने के साथ ही ड्यूटी में शामिल होने वाले पुलिस कर्मियों और तैनाती स्थल वाले जिलों को सूची दे दी गई है। पुलिस फोर्स के अलावा अर्द्धसैनिक बल, जीआरपी और एसएसएफ बटालियन से भी इस बार ड्यूटी लगाई गई है। छठें चरण का मतदान समाप्त होते ही चुनाव ड्यूटी में लगी फोर्स गोरखपुर में आमद कराने लगेगी। उनके ठहरने और खाने का बंदोबस्त स्थानीय स्तर पर पुलिस प्रशासन ने पूरा कर लिया है। चुनाव के दौरान पुलिस कर्मियों के लिए रोजमर्रा से जुड़े सामानों की एक किट भी तैयार कराई जा रही है। जिसमें तेल–साबुन, शैम्पू और तौलिया के साथ खाने–पीने के सामान भी होंगे। चार चरणों का लोकसभा चुनाव पूरा हो गया है। गोरखपुर जिले में मुख्य रूप से सातवें चरण में चुनाव होना है हालांकि छठें चरण में भी एक विधानसभा का इलाका जो कि संतकबीरनगर लोकसभा क्षेत्र में आता है वहां चुनाव होगा। ऐसे में फोर्स की तैनाती और ड्यूटी लगाने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। वहीं दूसरी तरफ गोरखपुर की पुलिस फोर्स भी चौथे चरण तक चुनाव कराने बाहर गई थी वह करीब–करीब लौट आई है। चुनावी सभा, रोड शो सहित सभी पार्टी के नेताओं के आने का सिलसिला भी शुरू हो गया है। ऐसे में स्थानीय स्तर पर पुलिस की ड्यूटी लगाई जा रही है। वहीं छठें चरण का चुनाव होने के बाद अन्य जिलों से गोरखपुर आने वाली फोर्स अपनी आमद शुरू करेगी और उनकी जिले स्तर पर बूथ और थानेवार ड्यूटी लगाई जाएगी। चुनाव ड्यूटी में मेरठ, शाहजहांपुर, आगरा, बाराबंकी, अयोध्या और अम्बेडकर नगर जिले की फोर्स की ड्यूटी लगाई गई है। वहीं लखनऊ और आगरा की जीआरपी के साथ ही एसएसएफ लखनऊ बटालियन की फोर्स भी लगाई गई है। चुनाव ड्यूटी में आने वाली फोर्स के रुकने की व्यवस्था करने के साथ ही उनके अन्य जरूरी सुविधाओं का भी ख्याल रखा जा रहा है। रोजमर्रा से जुड़ी चीजे जैसे की तेल–साबुन, शैम्पू, तौलिया, मच्छर अगरबत्ती और खाद्य प्रदार्थ का पैकट का एक किट तैयार किया जा रहा है। एसपी क्राइम को इसका नोडल बनाया गया है। वहीं प्रत्येक टोली का यह किट मिल जाए इसके लिए बीपीओ को जिम्मेदारी दी गई है।

अदालती नोटिस

सम्मन बनाम कायम मुकाम कानूनी मुद्दाअलेह मुतवफ्फा
(आर्डर 22, कायदा 4)
न्यायालय–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) खलीलाबाद बस्ती जिला–बस्ती
प्रकीर्णवाद सं0 99/2022
विजय कुमार
बनाम
अजय कुमार
7/1 राजेश्वर 7/2 सूरज 7/3 सुरेन्द्र पुत्रगण कोमल 8/1 रमेश 8/2 राजेश पुत्रगण मिश्रीलाल निवासीगण कस्बा मेंहदावल तप्पा व तहसील मेंहदावल जिला संतकबीर नगर

तारीख पेशी 11–07–2024

हरगाह मुद्दई ने एक नालिश इस अदालत में बतारीख माह सन 20 ई0 बनाम मुद्दाअलेह के रूजू की थी, जो बाद की मौत हरगाह मुद्दई मजकूर ने एक दरख्वास्त इस अदालत में गुजारी है कि आप मुतवफ्फा मजकूर का कायम मुकाम कानूनी वारिस है और चाहता है कि बजाय उसके मुद्दाअलेह बनाये जांय।

लिहाजा आपको हुक्म होता है कि बतारीख 11 माह 07 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे इस अदालत में हाजिर होकर मुकदमा मजकूर जबाबदेही कीजिये और अगर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा वगैर हाजिरी आपके मसमूअ और फैसला होगा। बवक्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत आज बतारीख 17 माह 05 सन 2024 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन बनाम कायम मुकाम कानूनी मुद्दाअलेह मुतवफ्फा
(आर्डर 22, कायदा 4)
न्यायालय–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) खलीलाबाद बस्ती जिला–बस्ती
वाद सं0 108/2014
हंसराज
बनाम
रामउजागिर आदि
2/1 राजेश 2/2 बब्लू उर्फ रमेश पुत्रगण रामसुरेश ग्राम महरीपुर तप्पा दुबखरा परगना नगर पूरव तहसील व जिला–बस्ती 2/3 श्रीमती रेशमा देवी पत्नी रामसुरेश 2/4 संगीता देवी पत्नी रामजतन पुत्री रामसुरेश साकिन कड़जहना तप्पा रूधौली परगना मगहर पश्चिम जिला–बस्ती 2/5 सुनीता पत्नी भानू पुत्री रामसुरेश ग्राम बुधिया तप्पा अतरोह परगना बस्ती पश्चिम तहसील हर्रैया जिला बस्ती

तारीख पेशी 19–07–2024

हरगाह मुद्दई ने एक नालिश इस अदालत में बतारीख माह सन 20 ई0 बनाम मुद्दाअलेह के रूजू की थी, जो बाद की मौत हरगाह मुद्दई मजकूर ने एक दरख्वास्त इस अदालत में गुजारी है कि आप मुतवफ्फा मजकूर का कायम मुकाम कानूनी वारिस है और चाहता है कि बजाय उसके मुद्दाअलेह बनाये जांय।

लिहाजा आपको हुक्म होता है कि बतारीख 19 माह 07 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे इस अदालत में हाजिर होकर मुकदमा मजकूर जबाबदेही कीजिये और अगर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा वगैर हाजिरी आपके मसमूअ और फैसला होगा। बवक्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
वाद सं0 350/2023
अदालत–श्रीमान सिविल जज (सी0डी0) महोदय बस्ती जिला–बस्ती
इमलावती देवी
बनाम
सत्य प्रकाश पटेल
1. सत्य प्रकाश पटेल पुत्र स्व0 विरजाराम निवासी ग्राम हवेली खास (बरगदवा) पो0 गांधी नगर तप्पा हवेली परगना बस्ती पूरब तहसील व जिला बस्ती

तारीख पेशी 10–07–2024

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 10 माह 07 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख 16 माह 05 सन 2024 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

अदालती नोटिस

सम्मन वास्ते करारवाद उमूर तनकीह तलब
(आर्डर 5 कायदा 1 व 5)
वाद सं0 205/2023
अदालत–श्रीमान सिविल जज (सी0डी0) एफ0टी0सी0 महोदय बस्ती जिला–बस्ती
रियाज अहमद
बनाम
अकबर अली
1. गुलाम अब्दुल कादिर पुत्र अकबर अली 2. दरख्सा अंजुम 3. नैन्सी 4. श्रीमती किस्मतुनिशा पुत्रीगण अकबर अली साकिनान मौजा दुबौलिया तप्पा दुबौलिया परगना अमोढ़ा तहसील हर्रैया जिला बस्ती

तारीख पेशी 10–07–2024

हरगाह ने आपके नाम नालिश बाबत के दायर की है। लिहाजा आपक 10 माह 07 सन 2024 ई0 बवक्त 10 बजे दिन असालतन या मारफत वकील के जो मुकदमें के हालत से करार वाकई वाकिफ किया गया हो और जो कुल उमूर अहम मुतल्लिका मुकदमा जबाब दे सके या जिसके साथ कोई और सख्श हो जो कि जबाब ऐसे सवालत का दे सके हाजिर हों और जबाबदेही दावा कीजिये और हरगाह वही तारीख जो आपके इजहार के लिये मुकर्रर है वास्ते इनफिसाल कत्तई मुकदमा के तजबीज हुई है और आपको लाजिम है कि उसी रोज जुमला दस्तावेज को जिनको आप अपनी जबाबदेही के तहत इस्तेमाल करना चाहते हों पेश करें।

आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज मजकूर आप हाजिर न होंगे तो मुकदमा बगैर हाजिरी आपके मसमुआ और फैसला होगा।

बसख्त मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।

द0 हाकिम

कुसुम सिंह कामेश सिंह महाविद्यालय इटबहरा गौर–बस्ती (उ०प्र०)

आवश्यकता है

प्राचार्य पद– 01

स्नातक स्तर (कला संकाय) पाठ्यकम हेतु सहायक प्रोफेसर–प्राचीन इतिहास, हिन्दी, अंग्रेजी, समाजशास्त्र, भूगोल, गृहविज्ञान, राजनीतिशास्त्र विषय हेतु 1–1 पद ।

स्नातक स्तर (विज्ञान संकाय) पाठ्यकम हेतु सहायक प्रोफेसर–वनस्पति विज्ञान, गणित, भौतिक विज्ञान, जन्तु विज्ञान विषय हेतु 1–1 पद व रसायन विज्ञान विषय हेतु 2 पद ।

योग्यता:– यू०जी०सी० एवं सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु के परिनियमावली के अनुसार उक्त पदों हेतु योग्य अभ्यर्थी विज्ञापन प्रकाशन से 21 दिनों के भीतर योग्यता सम्बन्धी समस्त वांछित प्रमाणपत्रों की स्वप्रमाणित छायाप्रति संस्थान के कार्यालय में प्रेषित करें।

(कामेश कुमार सिंह)
प्रबन्धक
मो०9838280008, 9335346708

दैनिक भारतीय बस्ती

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
सम्पादक दिनेश चन्द्र पाण्डेय

प्रबन्ध सम्पादक–**दिनेश सिंह**
संयुक्त सम्पादक–**प्रदीप चन्द्र पाण्डेय**
अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय–
चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या–फैजाबाद
लखनऊ कार्यालय–
आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।
गोरखपुर कार्यालय–
इलाहीबाग गोरखपुर।
मो09450567450 9336715406,
ई.मेल**bhartiyabasti@yahoo.com**
bhartiyabasti@gmail.com